ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26 | जुलाई -I- 2024 | अंक - 07 | माउण्ट आबू | Rs.-12

आध्यात्मिकता द्वारा विश्व बंधुत्व को शक्ति प्रदान करने का अनूठा प्रयास

- राष्ट्रपति

भारत मंडपम, प्रगति मैदान : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने किया ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वार्षिक सेवा योजना 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वच्छ और स्वस्थ समाज' का राष्ट्रीय शुभारंभ

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान विश्व बन्धुत्व के विस्तृत और सुदृढ़ आधार पर खड़ा है, जो पंथ और धर्मों की सीमाओं से परे है- द्रौपदी मुर्मू]

नई दिल्ली-भारत मंडपम । ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वार्षिक योजना 'स्वच्छ और स्वस्थ समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' का शुभारंभ प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में हुआ। मंडपम के प्लेनरी सभागार में इस योजना का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि यह संस्थान आध्यात्मिक बंधुता यानी विश्व बंधुत्व व वसुधैव कुटुम्बकम् के महान आदर्श और सुदृढ़ आधार पर खड़ा है, जो कि पंथ और धर्मों की परिभाषाओं में सीमित नहीं है।

'एक ईश्वर-एक विश्व परिवार' की चेतना को पूरे विश्व में पहुंचाया

राष्ट्रपति ने कहा कि अक्टूबर 2023 में राष्ट्रपति भवन में आयोजित 'इंटरफेथ मीट' का उद्देश्य भी प्रेम, करुणा, शांति, पवित्रता, सत्य और अहिंसा जैसे मूल्यों पर आधारित था, जो सभी धर्मों में विद्यमान है। उन्होंने कहा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना के अनुरूप 'एक ईश्वर एक विश्व परिवार' की चेतना को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने पूरे विश्व में प्रसारित किया है। धार्मिक सद्भावना व मानवीय एकता पर आधारित यह संस्था, आध्यात्मिक चेतना व वार्षिक परियोजना एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज की पुनः स्थापना में सफल होगी।

आध्यात्मिकता के द्वारा सकारात्मकता को दिया बढ़ावा

महर्षि वेदव्यास के एक कथन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य परोपकार से जैसे पुण्य का भागी बनता है, वैसे दूसरों को कष्ट देने से पाप का भी भागी बनता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा मनुष्यों में पनप रही नकारात्मकता तथा निराशा को सकारात्मकता एवं शुभ आशा में परिवर्तित कर व्यक्तिगत जीवन को सुखमय बनाने में सार्थक भूमिका निभा रहा है।

विश्व परिवर्तन के लिए महिलाओं द्वारा संचालित विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक संगठन 'ब्रह्माकुमारीज़' : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू नई दिल्ली में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'स्वच्छ और स्वस्थ समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' कार्यक्रम के शुभारंभ समारोह में शामिल हुईं। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि विश्व इतिहास के तथा राष्ट्रों के इतिहास के स्वर्णिम अध्याय सदैव आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित रहे हैं। विश्व इतिहास साक्षी है कि आध्यात्मिक मूल्यों का तिरस्कार करके केवल भौतिक प्रगति का मार्ग अपनाना अंततः विनाशकारी ही सिद्ध हुआ है। स्वच्छ मानसिकता के आधार पर ही समग्र स्वास्थ्य संभव होता है। सही अर्थों में स्वस्थ व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों आयामों पर खरा उतरता है। ऐसे व्यक्ति स्वस्थ समाज, राष्ट्र और विश्व समुदाय का निर्माण करते हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही वास्तविक सशक्तिकरण होता है। जब किसी धर्म और पंथ को मानने वाले अध्यात्म के आधार से हट जाते हैं तो वे धर्मान्धता का शिकार हो जाते हैं और अस्वस्थ मानसिकता से ग्रस्त हो जाते हैं। आध्यात्मिक मूल्य सभी धर्मों के लोगों को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि स्वार्थ से ऊपर उठकर लोक-कल्याण की भावना से कार्य करना, आंतरिक आध्यात्मिकता की सामाजिक अभिव्यक्ति है। लोक-हित यानी परोपकार करना सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक मूल्यों में से एक है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भय, आतंक और युद्ध को बढ़ावा देने वाली शक्तियां विश्व के कई हिस्सों में बहुत सक्रिय हैं। ऐसे वातावरण में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने 100 से अधिक देशों में अनेक केन्द्रों के माध्यम से मानवता के सशक्तिकरण का प्रभावी मंच उपलब्ध कराया है। यह आध्यात्मिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार द्वारा विश्व बंधुत्व को शक्ति प्रदान करने का अमूल्य प्रयास है। राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे ये देखकर प्रसन्नता होती है कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान महिलाओं द्वारा संचालित किया जाने वाला विश्व का संभवतः सबसे बड़ा आध्यात्मिक संस्थान है। उन्होंने कहा कि इस संस्थान में ब्रह्माकुमारी बहनें आगे रहती हैं तथा उनके सहयोगी ब्रह्माकुमार भाई नेपथ्य में कार्यरत रहते हैं। ऐसे अनूठे सामंजस्य के साथ यह संस्थान निरंतर आगे बढ़ रहा है। ऐसा करके इस संस्थान ने विश्व समुदाय के सम्मुख आध्यात्मिक प्रगति और महिला सशक्तिकरण का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

ज्ञान-योग के द्वारा समाज सेवा में सक्रियता बढ़ी

राष्ट्रपति ने अपने व्यक्तिगत जीवन का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान के अभ्यास द्वारा सशक्त होकर प्रबल पीड़ा के दौर से बाहर निकल आईं और सक्रियता से समाज सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ सकीं।

स्वस्थ पीढ़ी निर्माण के लिए बच्चों में सेवाभाव जागृत करना अनिवार्य

युवाओं में आध्यात्मिक जागृति तथा महिला सशक्तिकरण जैसे कार्यक्रमों से ब्रह्माकुमारीज़ ने अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के अंदर सादगी, सत्यनिष्ठा और सेवा भाव जागृत करना स्वस्थ पीढ़ी के निर्माण के लिए अनिवार्य है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने 'संकल्प, साधना और सिद्धि' व संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने 'आंतरिक शक्तियों का विकास' विषय पर सभी को प्रेरणा दी। मध्यकालीन सत्र राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में वक्ता के रूप में अध्यक्षा एआईडब्ल्यूसी कल्याणी राज, अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय प्रियदर्शिनी राहुल, अध्यक्षा राष्ट्रीय महिला आयोग रेखा शर्मा तथा अतिरिक्त सचिव कोयला मंत्रालय रूपेन्द्र बरार उपस्थित रहे। मुख्य वक्तव्य माउण्ट आबू से आईं संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने दिया। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने आशीर्वचन दिया तथा राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी ने महिला प्रभाग की सेवाओं पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. शारदा दीदी ने मंच का कुशल संचालन किया। सायंकालीन सत्र 'समय की पुकार' विषय पर परिचर्चा में ब्र.कु. जयंती दीदी, अति. महासचिव ब्र.कु. ब्रजमोहन भाई तथा लंदन से आए प्रसिद्ध लेखक तथा पत्रकार नेविल हौजकिन्सन उपस्थित रहे। संचालन वरिष्ठ पत्रकार नारायणी गणेश ने किया।

संगीत संध्या की सुमधुर संगीत की लहरियों का सभी ने आनंद लिया। जिसमें प्रसिद्ध आध्यात्मिक गायिका बहन असिमता, बहन रीना, किरण बहन, चांद मिश्रा, जयगोपाल भाई आदि शामिल रहे।

योग अवस्था ही परमात्म प्रेरणा प्राप्त करने का स्रोत

जबकि दैवीगुणों से सजना ही मनुष्य का लक्ष्य है तो योग की तार को न टूटने देना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है। उसमें ही कल्याण है।

मनुष्य इस गुह्य भेद को जानते ही नहीं कि सूक्ष्म आत्मा सूक्ष्म परमात्मा के पास अपनी याद मन या बुद्धियोग ही के अव्यक्त रास्ते से भेज सकती है।

हर कोई चाहता है कि हम परमात्म प्रेरणा प्राप्त करें। इसके लिए वो विभिन्न तरीके भी आज़माता है। किंतु योग अवस्था में रहना ही मानो परमात्मा की प्रेरणा का पूरा पालन करना है। आज सारी दुनिया बुद्धिमानों की राय, मत पर चलना चाहती है परंतु बुद्धिमानों की बुद्धि, बुद्धिदाता जो परमात्मा हैं उनकी राय पर चलने की तो एकमात्र युक्ति है ही योगयुक्त अवस्था को धारण करना। क्योंकि उस अवस्था में स्थित हुए बिना कोई मनुष्य परमात्मा की प्रेरणा ले ही नहीं सकता है। योग को दूसरे सरल शब्दों में 'याद' भी कहते हैं। परमात्मा की याद सदा बनी रहे, अर्थात् उनकी प्रेरणा व संकेत के अनुरूप अवस्था और व्यवस्था बनी रहे।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

व्यक्त भाव में अर्थात् देहभान में तो माया पाँच विकारों का भी प्रवेश होता है, अतः पूर्ण निर्दोष बनने के लिए अपनी शांत और अंतर्मुखी अर्थात् योगयुक्त अवस्था में स्थित रहना चाहिए। क्योंकि परमपिता परमात्मा सूक्ष्म आकार में जिस देश के निवासी हैं उसमें है ही अंतर्मुखता और शांति का प्रभाव। जब मनुष्य आत्मा उस अव्यक्त अवस्था में टिककर वाणी बोलेगी तो उसके वाक्य यथार्थ और सत्य ही निकलेंगे। और उसकी मानसिक अवस्था से मधु के समान मिठास अथवा कस्तुरी के समान खुशबू आयेगी। जबकि दैवीगुणों से सजना ही मनुष्य का लक्ष्य है तो योग की तार को न टूटने देना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है। इसी योग युक्त अवस्था के रास्ते से ही तो मनुष्य आत्मा अव्यक्त मूर्त परमात्मा के अव्यक्त धाम की यात्रा कर सकेगी। सूक्ष्म को सूक्ष्म रीति से ही पाया जा सकता है। कर्मातीत अवस्था को कर्मातीत बनने के अभ्यास से ही तो प्राप्त किया जा सकता है। अतएव योगयुक्त अवस्था की टेव डालना ही सच्चे पुरूषार्थ का वास्तविक पुरूषार्थ है।

योगयुक्त अवस्था ही तो कवच है

योगयुक्त अवस्था ही तो कवच है, क्योंकि ये माया के सभी वारों से बचाने का काम करता है। अब इस मायापुरी का वातावरण तो है ही तमोप्रधान। इस कारण योगयुक्त अवस्था में रहने से ही हर हालत में बचाव और कल्याण है। क्योंकि इस सर्वोत्तम अवस्था से ही मनुष्य आत्मा यहां ही मानो सूक्ष्म देश के जैसा वातावरण बना सकेगी। इसलिए सदा योगी को योग की कुटिया में गुप्त तपस्या करते ही रहना चाहिए।

योगाभ्यास से ही याद भेजना संभव है

इस अव्यक्त योगयुक्त अवस्था से ही मनुष्य परमपिता परमात्मा की ओर अपनी याद परमधाम तक भेज सकता है। क्योंकि जो जितना सूक्ष्म है, वह 'तंतु बिना तार' के रास्ते शीघ्र ही अव्यक्त स्वरूप परमात्मा के पास पहुंचता है। व्यक्त तो व्यक्त देश में ही प्रत्यक्ष होता है। परंतु सूक्ष्म में तो फिर भी सूक्ष्म ही प्रकट होता है। अब दुनिया वाले तो व्यक्ति(देह इत्यादि) के भान में आकर परमात्मा को अनेक व्यक्त यज्ञ, जप, तप, पूजा, पाठ आदि के तरीकों से पाने का अयथार्थ पुरूषार्थ करते हैं। क्योंकि वे इस गुह्य भेद को जानते ही नहीं कि सूक्ष्म आत्मा सूक्ष्म परमात्मा के पास अपनी याद मन या बुद्धियोग ही के अव्यक्त रास्ते से भेज सकती है। इस गुह्य युक्ति से अपरिचित होने के कारण अनेकों को उस अनोखे जीवन का अनुभव ही नहीं है जो कि योगावस्था अथवा अव्यक्तावस्था में स्थित होने वाली आत्माओं को अब परमपिता परमात्मा द्वारा अनुभव हो रहा है। अतः अब जो कोई भी योग अर्थात् अव्यक्त प्रभु की अव्यक्त याद गंवा बैठता है वह अपनी ही कमाई में घाटा डालता है। मानो कि वह अभी पूरा सजग नहीं हुआ है, या उसे अभी इस अविनाशी कमाई की खुमारी चढ़ी ही नहीं है। जैसे हमने बताया, मनुष्य आत्मा परमात्मा को पाने की जो विधि अपनाती है, वह स्थूल है। जबकि परमपिता परमात्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं, तो हमें भी अपने वास्तविक, सूक्ष्म व अव्यक्त रूप को न सिर्फ जानना अपितु उस स्वरूप में स्थित रहकर सूक्ष्म परमात्मा से मिलन मनाना है। ये गुह्य रहस्य व विधि आज हम न अपनाने के कारण, न परमात्मा से मिलन मना सकते, न ही उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकते। योगयुक्त अवस्था ही इस गुह्य रहस्य, गुत्थी को सुलझाकर परमात्मा तक अपनी बात व भाव पहुंचा सकती है और उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकती है

अशरीरी स्थिति में स्थित होने का अनुभव

हम सभी के दिल का यही संकल्प है कि हम सभी बाप के समान बन जायें। समान कौन बन सकता है? निराकार बाबा के समान हम अजन्मा तो नहीं बन सकते, लेकिन निराकार बाबा जैसे अशरीरी हैं ऐसे हम भी अशरीरी स्थिति में स्थित हो सकते हैं। जब हम याद में बैठते हैं तो पहली कोशिश यही करते हैं कि जितना हो सके उतना अशरीरी स्थिति में स्थित रहें। मच्छर आया, मक्खी आई या कोई ने ज़रूरी काम से क्रॉस किया तो ऐसा नहीं है कि हमको पता ही नहीं पड़ेगा। लेकिन हम अपने लगन में ऐसे मग्न हैं जो हमको वो डिस्टर्ब नहीं करेगा। हम अपनी मस्ती में मस्त होंगे। जैसे स्थूल हाथ ऊपर-नीचे हुआ तो मन ऊपर-नीचे नहीं होगा। हाथ नीचे-ऊपर हुआ - यह तो शरीर का कर्म है लेकिन मन और बुद्धि हलचल में नहीं आये। जैसे आप कभी डीप विचारों में खोये होते हैं, उस समय खाना आपके सामने आया, आपने खाना शुरू कर दिया आपसे कोई पूछे कि भोजन में नमक ठीक है? लेकिन आप डीप विचारों में ऐसे मग्न हैं जो आपको नमक-मिर्च का टेस्ट खींचता ही नहीं है। ऐसे ही कोई बात जब विघ्न रूप हो जाती है तो भी उस बात में खोये-खोये रहेंगे। जब मनुष्य साधारण बातों में खो जाता है तो डिस्टर्बेन्स नहीं होती। हम भी अशरीरी स्थिति में स्थित हो गये, अशरीरी बाबा की याद में मग्न हो गये, लीन हो गये, खो गये तो हमको कोई भी बात हलचल में नहीं लायेगी। बात आई, पास हो गई हम फिर अपने में मग्न। जैसे कमल पुष्प रहता कीचड़, पानी में है लेकिन पानी और कीचड़ से न्यारा है। एक बूंद भी उसके ऊपर स्पर्श नहीं करती। ऐसे हम भी जब योग की स्थिति में स्थित हो जाते हैं तो कोई भी बाहर का, माया का, प्रकृति का प्रभाव मन-बुद्धि को अपने तरफ नहीं खींच सकता। अपने लगन में मग्न रहते हैं। इसको कहते हैं अशरीरी स्थिति का अनुभव।

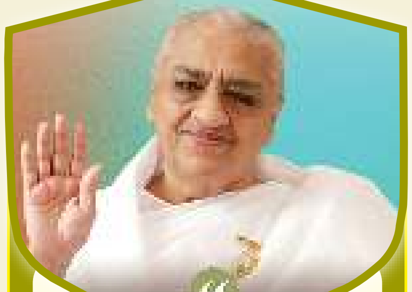
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

अभी मरजीवा जन्म लिया है। मरजीवा माना मरकर जीना। हम यह नहीं कहेंगे हम कलियुगी हैं। हम कहेंगे हम संगमयुगी हैं। यह हमारा नया जन्म है माना हम शूद्र जीवन से मर चुके और ब्राह्मण जीवन में नया जन्म है।

दूसरी बात, जैसे बाबा अवतरित होता है, शरीर में प्रवेश होता है, साकार बनता है लेकिन है बिल्कुल न्यारा। इसी रीति बाबा हमको कहते हैं कि तुम आत्मा भी शरीर में अवतरित हुई हो, तो अपने को अवतार समझो। अवतार का अर्थ ही है जो अवतरित हुआ हो। जैसे मैं आत्मा परमधाम से आई, शरीर का आधार लिया, कर्म कर रही हूँ लेकिन हूँ मैं न्यारी। अपना लौकिक जन्म आदि सब भूल जाओ। अभी मरजीवा जन्म लिया है। मरजीवा माना मरकर जीना। हम यह नहीं कहेंगे हम कलियुगी हैं। हम कहेंगे हम संगमयुगी हैं। यह हमारा नया जन्म है माना हम शूद्र जीवन से मर चुके और ब्राह्मण जीवन में नया जन्म है।

इस नये जन्म में, जब हम ब्राह्मण बने तो हमने प्रतिज्ञा की कि ये तन-मन-धन-सम्बन्ध सब तेरा। तेरा कहने से न्यारे और प्यारे हो जाते और मेरा कहने से पिंजरे में फंस जाते हैं। तेरा कहने से पिंजरे का दरवाजा खुल जाता है।

मन में व्यर्थ संकल्प आने न दें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

दिल का, मन का एक बार डायलॉग चला था - दिल है शरीर का भाग, मन है आत्मा का। दिल और मन- मन चाहता है मैं बाबा को याद करूं। दिल में कोई बात बैठी है, कुछ पिंच हुआ है तो अन्दर से पुरानी बात दिल से भुली नहीं है। मनमनाभवः नहीं हो सकते। तो दिल चाहता है मैं बाबा को याद करूँ बाकी सबसे वैराग्य। परन्तु मन अपनी चंचलता छोड़ता नहीं है। मन को हज़ार आंखें हैं, दूर-दूर देखता है। आँखें यहाँ खुली हैं मन और कहीं देख रहा है। लेकिन दिल साफ हो, दिल में लगन ऐसी हो जो मन हमारे हाथ में हो। जब चाहूं- शांत हो जाऊं। व्यर्थ सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है। कई अपने लिए भी व्यर्थ सोचते हैं। व्यर्थ न सोचें, राइट सोचें। दिल में कोई भी बात हो तो उसे भुला दें। दिल में रखेंगे तो वह नुकसान करती रहेगी। ड्रामा का ज्ञान अच्छा मिला हुआ है कोई ने धोखा दिया, कुछ किया उसे भुला दें। किसी ने कुछ कहा या हुआ भी तो चलो पास्ट का हिसाब था या प्रेज़ेन्ट इसने बोलकर सावधान किया। आगे के लिए खबरदार, होशियार रहेंगे। भोले-भाले नहीं रहेंगे। सम्बन्ध में आते हुए न्यारे-प्यारे रहेंगे, बैलेन्स रखेंगे। जो बात सामने आती है- सिखाने के लिए आती है। हर आत्मा का पार्ट है। जो हुआ अच्छा हुआ। सोचते हैं तो कर्मबन्धन बढ़ाते हैं। पुराने सम्बन्धियों के लिए तो सोचना बंद कर दिया लेकिन अभी यहाँ किसी के प्रति लगाव-झुकाव शुरू हुआ, सोचने व बोलने में आया तो कर्मबन्धन शुरू हुआ। इसमें खबरदार रहो।

लम्बी खजूर है ऊपर जा रहे हैं, सावधानी है। कोई बहुत कोमल दिल वाले हैं, कोई कठोर दिल वाले हैं, यह दोनों नुकसानकारक हैं। कोमल दिल वाले रहम वश लगाव में जायेंगे कठोर दिल वाले किसी को माफ नहीं करेंगे। न कठोर बनना, न कोमल बनना। रहमदिल हो, लेकिन कोमल दिल न हो। मजबूत हों, कठोर न हों। ज्ञान से ऐसी स्थिति बना दें। फिर सब ठीक हो जायेगा। मन्सा सेवा करनी है तो मन में व्यर्थ संकल्प आने न दें क्या होगा, कैसे होगा, नहीं। मेरा मन, वृत्ति इतने साफ हों जो बाबा के पास रहूँ और अनेक आत्मायें भी बाबा के पास का अनुभव करें- इससे मायाजीत बनने की शक्ति मिलती है। साथ का अनुभव बहुत काम करता है। हम सदा बाबा के साथ रहें और दूसरे बाबा के पास आयें, दूर होने के कारण बुद्धि भटकती है, पास होने से बुद्धि शांत रहती है। तो हर्षित रहने के लिए ज्ञान,योग,धारणा तीनों अच्छी तरह से मेरे पास हों। ज्ञान हो योग कम हो, योग हो धारणा में कमी हो तो हर्षित नहीं रह सकते।

सबके साथ रहते, सब पेपर सामने होते नष्टोमोहा रहें...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

समाज में रहते समाज को निभाना भी और समाज की गाली भी खाना, कभी समाज दुश्मन बनेगा, कभी कहेगा बहुत अच्छा। यह तो पेपर आयेंगे ही।

आप सबको देख प्यारे बाबा का एक बोल याद आता। बाबा कहते तुम बच्चों को सच्ची-सच्ची गीता सबको सुनानी है, तुम घर-घर में सच्ची गीता पाठशाला खोलो। गीता के भगवान को सिद्ध करो, इसी पर ही तुम्हारी विजय होनी है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम से मनुष्यों का इतना ध्यान नहीं जाता लेकिन जब सुनते सच्ची गीता पाठशाला तो नाम सुनने से ही अन्दर आता चलकर देखें यहाँ क्या सुनाते हैं।

आप सब सच्ची गीता पाठशाला के निमित्त बने हुए सच्चे सेवाधारी हो। जो निमित्त बनते उनकी बाबा अपरमअपार महिमा गाता। ब्रह्माकुमारियों ने तो अपनी जीवन सेवा के लिए अर्पित की, उन्हों का महान भाग्य है लेकिन उनसे भी अधिक भाग्य आपका है। उन्होंने सबकुछ त्याग कर सेवाकेन्द्र बनाया है। शो केस के सैम्पुल आप हैं। शो केस में हमेशा सैम्पुल को रखा जाता क्योंकि आप ही दूसरों के सामने बाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष करने वाले हो इसलिए आपकी बहुत वैल्यु है। तुम्हारे लिए यह पाठ है कि रहना है प्रवृत्ति में लेकिन पर वृत्ति में रहना है। आपको सबके साथ में रहते नष्टोमोहा का पाठ पढ़ना है। यह सैम्पुल आप लोगों का है।

ब्रह्माकुमारियों के आगे कोई भी पेपर आये तो नो फिकर क्योंकि वह बाबा की सर्विस पर हैं, परन्तु आपके आगे चार पेपर सदा ही खड़े हैं। कहा जाता है ये ज्ञान इतनी ऊंची मंज़िल है, चढ़े तो चाखे ज्ञान रस, गिरे तो चकनाचूर... यह है लम्बी खजूर। यह कहावत प्रवृत्ति में रहने वालों के लिए है। चढ़ना भी ज़रूर है, रस पीना भी ज़रूर है लेकिन चढ़ें तो कैसे? क्योंकि इधर है प्रवृत्ति, उधर है समाज, इधर है धन्धा और उधर है बाबा। यह सब पेपर आपके सामने हैं।

प्रवृत्ति वालों को अनेक चिंतायें रहती, आज बेटी बड़ी हुई है, शादी करनी होगी। यह करना होगा। इसके लिए धन्धा करें, पैसा इकट्ठा करें। चिन्ताओं की टोकरी सदैव सिर पर रहती। बहू-बेटी में ममता हो जाती। ऐसे सबके साथ रहते हुए, सब पेपर सामने होते हुए नष्टोमोहा रहें। यह सैम्पुल आप सबका है। आपको बुद्धि में अगर रहता बाबा यह प्रवृत्ति तेरी है तो सदा बेफिकर रहते। ऐसे कमल फूल का प्रैक्टिकल मिसाल आप लोग हैं।

गृहस्थी है उसके लिए धन्धा भी ज़रूर करना पड़ता, आज धन्धा अच्छा चलता, कल नहीं चलता। कई प्रकार के पेपर आपके सामने आते, अज्ञान में तो मनुष्य को धन्धे में अगर घाटा जो जाये तो शॉक आ जाता परन्तु ज्ञानवान कहते यह तो ड्रामा है। फिकरातों के बीच रहते बेफिकर रहना। निरसंकल्प रहना, ये सैम्पुल आप हैं। जो कमाते हुए भी अनासक्त रहते वही सैम्पुल बनते हैं। आज का धन्धा-धोरी भी क्या है? आज नौकरी कैसी है, कल कैसी है। यह अप-डाउन रोज़ होता। परन्तु यह सब होते भी नथिंगन्यू। अज्ञानियों में टेशन रहता और हम कहते नो टेन्शन बट अटेन्शन। समाज में रहते समाज को निभाना भी और समाज की गाली भी खाना, कभी समाज दुश्मन बनेगा, कभी कहेगा बहुत अच्छा। यह तो पेपर आयेंगे ही। इन सबको पार करते हुए चलना यह है आप सबका सैम्पुल।

अब आओ ब्राह्मणों की दुनिया में, यहाँ भी कई पेपर आते। जायेंगे सर्विस करने, सर्विस अच्छी हुई तो खुशी होगी। नहीं हुई तो दिलशिकस्त होंगे। कभी-कभी आपस में भी मित्र के बजाय परममित्र बन जाते। यह संस्कारों का भी बहुत कड़ा पेपर है। किसी को मित्र बनाना तो सहज है परन्तु परममित्र को मित्र बनाना यही मीठी-मीठी पढ़ाई है।

एक अच्छे लक्ष्य के साथ उसके प्राप्ति की विधि भी अच्छी हो

कई लोग होते हैं, उनके साथ न्याय नहीं हुआ तो जोश में आ जाते हैं, क्रोध में आकर कुछ कर बैठते हैं। वे नहीं समझते कि ठीक है, उनको न्याय नहीं मिला लेकिन उसके लिए क्रोध में आना, अत्याचार कर बैठना, यह भी न्याय नहीं है! न्याय नहीं मिला और न्याय प्राप्त करने के लिए क्रोध करते हैं, हिंसा करते हैं। अच्छा प्राप्त करने के लिए खराब काम कर लेते हैं। यह ठीक नहीं है। हमारा लक्ष्य भी अच्छा होना चाहिए और उसको प्राप्त करने की विधि भी अच्छी होनी चाहिए। यह हमने देखा है कि इसमें भी हम धोखा खा लेते हैं। हमारे कोई भाई-बहन हैं, वे हमसे व्यवहार ठीक नहीं करते। हमारे पीछे ही पड़ जाते हैं। हमसे ईर्ष्या करते हैं, द्वेष करते हैं। मान लो किसी वजह से हमारा और उनका स्वभाव-संस्कार नहीं मिलता। इसके लिए बाबा ने कहा है कि उनके प्रति हमें मधुरता, सहनशीलता, क्षमा, दिव्यता, सन्तोष, मिलनसार इत्यादि दिव्यगुणों की धारणा होनी चाहिए। इसके बदले उनकी बात या व्यवहार देख हम भी उत्तेजित होकर बोलने लगते हैं, व्यवहार करने लगते हैं तो हमारी जो स्थिति होनी चाहिए फरिश्ता स्वरूप की, बिन्दु स्थिति की या प्रभामण्डल की, वो न होकर हम नीचे की अवस्था में, शरीर अभिमान की अवस्था में आ जाते हैं।

हमारे सामने ज़रूर एक मूल्य होता है। फलाना आदमी इतने सालों से ज्ञान में होते हुए भी कई लोगों को परेशान कर रहा है, इसको कोई नहीं बोल रहा है, हम कुछ बोलें, हम इसको ठीक कर दें। लेकिन यह ज़िम्मेदारी आपको किसने दी है? बाबा कहते हैं, लॉ अपने हाथ में नहीं उठाओ। मैं न्यायकारी हूँ, मैं बैठा हूँ, मैं देखूंगा। आप अपना फर्ज़ पूरा करो, आपके लिए जो धारणा बतायी है, उनको धारण करो। मैंने जो स्थिति बनाने के लिए कहा है, वो बनाओ। धारणा करने में भी हम देखते दूसरों को हैं।

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

अपने आसुरी गुणों को छोड़ने के लिए जो पुरूषार्थ करना है, उसके लिए भी हम दूसरों को देखते हैं। इससे अपने दिव्यगुण को खो बैठते हैं। उससे अपनी स्थिति से नीचे आ जाते हैं। इसके बाद क्या होता है, मैंने पहले बताया था कि चित्र के बारे में, उसके मन में उस व्यक्ति का चित्र सामने आता रहता है कि वह व्यक्ति कैसा है। हमारे में जो चित्र आना चाहिए हमारे फरिश्ता स्वरूप का, प्रभामण्डल का, सारी सृष्टि को सकाश देने का, वो चित्र समाप्त हो जाता है। मैंने बताया था कि जब आपके विचार निगेटिव में बदल जाते हैं तो आपके मन में आने वाला चित्र भी निगेटिव में बदल जायेगा। इसलिए अपने सामने श्रेष्ठ चित्रों को कायम रखें या मूल्यों को कायम रखें तो निश्चित रूप से वो हमारी स्थिति बन जायेगी जो बाबा चाहते हैं।

बड़े हमें समझाते हैं, इशारा करते हैं तो स्वीकार करना चाहिए

तीसरी एक बात यह है कि जो हमारे में कोई कमी-कमज़ोरी आ जाती है, जिसका हमारे बड़े इशारा देते हैं, हमारा ध्यान उसपर नहीं है, जिसको हम ठीक समझ रहे हैं, जिससे हमें रूकावट पड़ रही है, जिसके कारण जो स्थिति होनी चाहिए, वो है नहीं। उसमें कोई हमें समझाता है, मार्गदर्शन करता है, इशारा करता है तो उसको हमें स्वीकार करना चाहिए लेकिन हम उसको नकार देते हैं। उसको हम सही सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। इससे भी जो हमारी स्थिति बननी चाहिए, वो नहीं बन पाती। समझते हुए भी उसको हम नहीं मानते हैं क्योंकि हम समझते हैं कि आगे के लिए हमारे व्यक्तित्व पर दाग लग जायेगा, लोग समझेंगे कि देखो, इसने अपनी गलती मान ली, उनके सामने हार स्वीकार कर ली। इससे कई बार हमारा विकास रूक जाता है। बाबा ने जो लक्ष्य दिया है, अगर उसके चित्र को सामने रखकर, उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर पुरूषार्थ करते हैं तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

बालागाम-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आने पर केन्द्रीय आरोग्य मंत्री मनसुखभाई मांडवीया को ईश्वरीय सौगात भेंट कर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. गीता बहन। साथ हैं पूर्व जिला भाजपा महिला मोर्चा प्रमुख प्रवीण बहन पटेल तथा अन्य।

स्वीडन-स्टॉकहोल्म। स्वीडन में भारतीय दूतावास में स्वीडन और लातविया में भारत के राजदूत तन्मय लाल से मुलाकात के पश्चात् उनके साथ उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय पाण्डव की राजयोग शिक्षिका डॉ. ब्र.कु. गीता बहन।

भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा से.7 स्थित राजयोग भवन में 400 से अधिक नवनिर्मित सुंदर प्रेरणादाई कलाकृतियों से सुसज्जित 'सृष्टि दर्शन आध्यात्मिक संग्रहालय' का भिलाई सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. आशा दीदी एवं अन्य ब्र.कु. बहनों द्वारा दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् रिबन काटकर विधिवत उद्घाटन किया गया। बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें इस कार्यक्रम में मौजूद रहे। इस संग्रहालय का अवलोकन करने हेतु विशेष ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी एवं रायपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी का भी आगमन हुआ।

चिलोडा-गांधीनगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बीएसएफ फ्रंटिअर हेड क्वार्टर चिलोडा,गांधीनगर में 'आर्ट ऑफ लिविंग एंड सोल्डरिंग विद स्पीरिचुअलिटी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य स्पीकर के तौर पर ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय से आये रिटा. कर्नल बी.सी.सती, अभिषेक पाठक,आईपीएस,आईजी,बीएसएफ गुज. फ्रंटिअर, डीआईजी एस.एफ. तिर्की व अन्य ऑफिसर्स व जवानों सहित ब्रह्माकुमारीज़ गांधीनगर संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, चिलोडा सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. तारा दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित 'संस्कार समर कैम्प' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए लक्ष्मणराव मगर विकास खंड जिला शिक्षा अधिकारी, वामनराव साहू,इंजीनियर,विद्युत विभाग, राजयोगिनी ब्र.कु.सरिता दीदी, कामिनी कौशिक, पार्वती वाधवानी एवं सुष्मा नंदा। कार्यक्रम में ब्र.कु. डॉ. प्रशांत भाई, विकास खंड जिला शिक्षा अधिकारी अमित तिवारी, अमित मोहबे,अध्यक्ष,संयुक्त शिक्षक संघ, मयंक भाई, प्रतिभागी बच्चे तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

बेंगलुरु-वी.वी.पुरम(कर्नाटक)। ब्रह्माकुमारीज़ के वरदानी भवन,बसवनगुड़ी सेवाकेंद्र पर अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस एवं अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. अम्बिका दीदी व ब्र.कु. छाया बहन ने स्वास्थ्य के सभी आयामों के बारे में बताया। इस अवसर पर केआईएमएस नर्सिंग कॉलेज के 280 से अधिक विद्यार्थी एवं स्टाफ उपस्थित रहे।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर सेवाकेंद्र में आयोजित 'हमारी नर्सेज़ हमारा भविष्य' विषयक कार्यक्रम में विश्वनाथ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रजनी बहन, नर्सिंग ऑफिसर एसएनसीयू शगुन, एमएच कोऑर्डिनेटर वर्षा चतुर्वेदी तथा अन्य नर्सेज़ सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान शिखर ओमशांति भवन में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए वन विभाग की मुख्य वन संरक्षक श्रीमती किरण बिसेन, शैल्बी हॉस्पिटल की फिज़ीशियन डॉ शिल्पा देसाई, सेंट पॉल स्कूल की शिक्षिका श्रीमती बबीता थम्मन, ब्र.कु.अनिता दीदी, ब्र.कु. उषा दीदी तथा अन्य।

वर्धा-महा.। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में प्रतिभागी बच्चों को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी बहन, मधु बहन, अपर्णा बहन, समाज उपायुक्त शरद चव्हाण तथा समाज सेविका सीमा पाखारे।

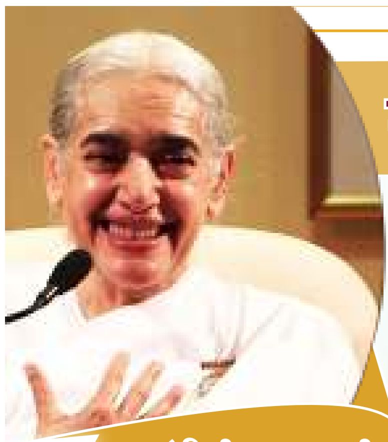

घर के गेट खोलने की चाबी... वैराग्य वृत्ति

साधन होते भी साधनों में रग न जाये

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

अपनी मन की वृत्ति बिल्कुल साफ है, बिल्कुल बाबा की भावना है, बाबा के प्रति ये संकल्प है कि जो बाबा हमसे सेवा कराये तो वो सेवा अपने आप ही होती रहती।

गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले अंक में आपने पढ़ा कि 40 वर्ष मैं दादी के पास एक ही कमरे में रही। तो दादी की कई बातें कदम-कदम पर याद आती ही रहती हैं। दादी ने कहा था कि मैं अपना हिसाब रखती हूँ सवेरे से रात्रि तक, मैं कितना लेती हूँ अपने तन के लिए, अपने मन के लिए और मैं कितना बाबा को सेवा में रिटर्न देती हूँ। मैं बिल्कुल ये हिसाब रखती हूँ कि लिया कितना स्थूल हिसाब से और मैंने दिया कितना सेवा के हिसाब से। अब आगे पढ़ते हैं...

गरीब ते गरीब भी कोई इतना हिसाब नहीं रखता कि मैंने लिया कितना और किया कितना। परंतु बाबा के बच्चे इतनी ऊंची स्थिति वाले भी ये ध्यान रखते। तो उस हिसाब से आप सोचो बाबा से जो सूक्ष्म लेते हैं उसकी तो कोई गिनती ही नहीं है। परंतु स्थूल में भी हम बाबा से लेते क्या हैं और रिटर्न में देते क्या हैं। तो जब ये हमारा इतना वैराग्य होगा कि हमें इस संसार से कुछ भी नहीं चाहिए। हाँ, बाबा प्रकृति दासी भी करता, परंतु उसमें भी मुझे कहाँ तक स्वीकार करना है ये मुझे अपना हिसाब रखना है। दादी के पास कितने लोगों ने आकर बढ़िया गाड़ी की चाबी दी होगी जब बहुत ज़्यादा भण्डारे में भी नहीं चला जाये कि योगी लोग क्या कर रहे हैं? तो उस भाई ने फिर कहा कि अच्छा सेवा के लिए अभी काम की चीज़ क्या हो सकती? तो दादी ने कहा कि मैं कहाँ भी क्लास के लिए जाती हूँ, भाषण के लिए बड़ा परिवार है तो आठ-दस लोग तो कह देते कि हमको दादी के साथ चलना है, परिवार इतना बड़ा तो नहीं था उस समय, तो आप ऐसी गाड़ी लेकर आओ जिसमें आठ-सात लोग बैठ सकें। ताकि उन्हों की सेवा हो सके। और वो बाबा के नज़दीक आ सकें। तो भाई आज्ञाकारी था तो वही काम किया और वो गाड़ी वापस करके वो गाड़ी लेकर आया जिससे सेवा हो सके।

तो जब मन में अपने लिए बिल्कुल कुछ संकल्प नहीं है कि ये मुझे चाहिए तो फिर हम देखते हैं कि सेवा के लिए भी प्रकृति दासी बनती। परंतु सेवा के लिए भी ये संकल्प न हो कि इस चीज़ के बिना सेवा नहीं हो सकती। शुरूआत में जब वारिस आत्मायें निकले, जब दादियां चौदह साल की भट्ठी करके संसार में वापिस लौटी तो उस समय दादियों के पास न कोई पुस्तक थी हाथ में और न कोई टोली। कुछ भी नहीं था। सेवा कैसे हुई? उन्हों की दृष्टि के द्वारा, उन्हों के मुख द्वारा जो बाबा ज्ञान सुनाते थे वो ज्ञान सुनाते रहे तो मुख द्वारा, वृत्ति के आधार से वो वातावरण भी बनता और फिर उस वातावरण से जो भी आत्मायें आती वो नज़दीक आती। विदेश की सेवा शुरू कहाँ से होती? दो छोटे कमरे। और छोटे कमरे तो थे लेकिन उनकी दीवारों में गीलापन था। तो वैसे तो दादी की तबियत ऐसी थी कि लंग्स का सदा ही दादी को प्रॉब्लम रहता था बचपन से ही। तो दादी ने ये नहीं सोचा कभी कि ये स्थान मेरे लिए योग्य नहीं है। ये स्थान मेरी तबियत को बिगाड़ेगा,नहीं। बाबा का स्थान है बस यही संकल्प।

उस छोटे से स्थान पर इतनी तपस्या रही कि विश्व की जो मुख्य देश, सारे विदेश की सेवा सम्भालने वाले आज हैं कई आत्मायें उस छोटे से स्थान से जन्म लिया, पालना ली और बड़े होकर उन्होंने भिन्न-भिन्न देशों में जाकर सेवायें की। तो ये जो मैं आपको बातें बता रही हूँ ये प्रैक्टिकल हमारे अनुभवों की हैं। ये थ्योरी की बातें नहीं हैं। अपनी मन की वृत्ति बिल्कुल साफ है, बिल्कुल बाबा की भावना है, बाबा के प्रति ये संकल्प है कि जो बाबा हमसे सेवा कराये तो वो सेवा अपने आप ही होती रहती। और जो भी साधन की ज़रूरत होती वो भी हमें प्राप्त होता रहता। तो कहाँ पर भी हमारी रग न जाये।

था, सिम्पल लाइफ थी। लंदन में तो एक भाई ने बहुत बढ़िया गाड़ी की चाबी आकर दादी को दी। दादी ने वो चाबी उनको वापस की, क्यों? दादी ने कहा कि मैं ये स्वीकार नहीं कर सकती हूँ। क्योंकि बाबा कहते हैं कि साधारण रीति से अपने जीवन को व्यतीत करो। न कि कोई ऐसी जीवन हो जिसमें औरों का ध्यान

दृष्टि द्वारा, संकल्प द्वारा वारिस आत्मायें पैदा हुईं। जिन्होंने फिर सेवा की रिस्पॉन्सिबिलिटी उठाई सारे भारत में तो क्या सारे विदेश में भी। तो सेवा के लिए कुछ चीज़ नहीं चाहिए। सेवा के लिए चाहिए साफ दिल और मन की वृत्ति।

मन की वृत्ति में ये है कि जो बाबा ने हमें दिया है वो हमें औरों को देना है। तो फिर उस

- क्रमशः

इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर "हमारी धरती, हमारा भविष्य" विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए नगर पालिका निगम के अपर आयुक्त अभय राजगांवकर, इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, जिला जैविक खेती महिला संयोजिका एवं मां रेणुका फूड्स की डायरेक्टर वैशाली मालवीय, श्रीमति सुभद्रा खापर्डे, नगर निगम के अधीक्षण यंत्री महेश शर्मा, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. अनिता तथा अन्य।

दावणगेरे-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिवालय में आयोजित 'स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' कार्यक्रम का शुभारंभ समारोह सुप्रसिद्ध टीवी कलाकार,वैद्य,लेखक एवं क्विज़ मास्टर डॉ. सोमशेखर के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर से बसव प्रभु स्वामी जी, चरण्तेश्वर स्वामी जी, अध्यापक श्री मंजुनाथ जी, कन्नड़ साहित्य परिषद के कार्यदर्शी श्री राम लिंग, शिवयोगी हीरेमठ जी, केदार लिंग महास्वामी जी, श्री नारायण स्वामी जी, कार्यक्रम की अध्यक्षा ब्र.कु. अनसूया बहन, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. लीला बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। इस अवसर पर शिव प्रसाद के द्वारा लिखित प्रसाद वाणी पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

नासिक-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के जीवन और संस्थान के इतिहास पर आधारित फिल्म 'द लाइट' की कॉलेज रोड के मूवी मैक्स द ज़ोन मल्टीप्लेक्स के तीन स्क्रीन पर स्क्रीनिंग की गई। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. वासंती दीदी, दैनिक गावकरी के भागवत उदावंत, कुमार कडलग,ब्यूरो चीफ दैनिक प्रहार, धनंजय बोडके उपसंपादक दैनिक लोकनामा, अजय भोसले उपसंपादक दैनिक लक्ष महाराष्ट्र, तुषार जाधव जिला प्रतिनिधि दैनिक साईमत, वसंत व्याख्यानमाला के अध्यक्ष श्रीकांत बेनी, प्रसिद्ध व्यवसायी नंदलाल चंदवडकर, डॉ. माणिकराव आव्हाड, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. वीणा बहन, ब्र.कु. चंदा बहन, ब्र.कु. कावेरी बहन सहित बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें व दर्शक मौजूद रहे।

इंदौर-इंद्रपुरी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय 'समर कैम्प' के दौरान चोइथराम हॉस्पिटल के डॉ. सतीश पाठक ने बच्चों को स्वस्थ रहने के टिप्स दिये और माइंड गेम भी कराये। ब्र.कु. पूर्णिमा बहन एवं ब्र.कु. सीमा बहन ने बच्चों का आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से मार्गदर्शन किया।

गांधीधाम-भारत नगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु मिलन सेवाकेंद्र पर मातृ दिवस के उपलक्ष्य में 'स्वस्थ एवं स्वच्छ परिवार के लिए माताओं की भूमिका' विषयक कार्यक्रम में विश्व सिंधी सेवा संगम प्रेसिडेंट श्रीमती सुजाता प्रधान, श्रीमती माधवी बेन चेलानी, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सरिता दीदी, कुमारी दिव्या, वीएसएसएस ग्रुप की सभी महिलायें व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

नौगांव-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर डॉ. रविंद्र पटेल, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. महेश पहारिया, नौगांव रानी साहब माया सर्वानी, ब्र.कु. रीना बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित लगभग 30 नर्सेज़ शामिल रहीं।

नवसारी-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गीता बहन। कार्यक्रम में डॉ. अमिता बहन,बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, ब्र.कु. रीटा बहन, ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. प्रिया बहन, ब्र.कु. मुकेश भाई सहित बड़ी संख्या में मातायें-बहनें शामिल रहीं। इस मौके पर 12वीं साइंस में नवसारी में प्रथम आई कुमारी वैभवी को सम्मानित किया गया।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षाविद् सेवा प्रभाग द्वारा नव विश्व भवन सेवाकेंद्र में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित उमंग समर कैम्प के तीसरे दिन को साइलेंस दिवस के रूप में मनाते हुए ब्र.क. पार्वती बहन एवं ब्र.कु. ममता बहन ने प्रतिभागी बच्चों का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर बच्चों के लिए म्यूज़िकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

इंदौर-रानी बाग(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कृष्णोदय नगर स्थित श्री रामकृष्ण धाम मंदिर में आयोजित पाँच दिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर 'एकता समर कैम्प' के समापन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कैलाश यादव,वरिष्ठ हाईकोर्ट एडवोकेट, जगदीश परिहार,प्रिंसिपल जगदाले हायर सेकेंड्री पब्लिक स्कूल, गीता कुशवाहा,लक्ष्मी विधवा महिला फाउंडेशन की राज्य समन्वयक, ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन,संचालिका रानी बाग सेवाकेंद्र, बाबूलाल लोदवाल, प्रो. हर्षा अकोटकर तथा ब्र.कु. रानी बहन।

थाने-शिवाजी नगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में मदर्स डे के अवसर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. सरला दीदी ने माँ की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर कार्यक्रम में शामिल सभी माताओं को सम्मानित किया गया तथा माताओं द्वारा सेवाकेंद्र की सभी बहनों का भी सम्मान किया गया।

दिव्य दर्शनीय स्वरूप कैसे बनें...

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप व इच्छा मात्रम अविद्या... ये दो स्वरूप इमर्ज करें

- गतांक से आगे...

पहला पुरुषार्थ देखा श्रृंगारी हुई मूर्त रहें, दूसरा पुरुषार्थ देखा कि अपने अव्यक्त स्वरूप को इमर्ज करना है, ज़्यादा से ज़्यादा उसको इमर्ज करते जाना है, और तीसरा बीज रूप या अशरीरीपन के अभ्यास द्वारा उस बीज स्वरूप में आकर हरेक पत्ते को सकाश देते जाना है।

चौथा पुरुषार्थ, जो बाबा कई बार कहते हैं कि बच्चे आपको भक्तों की पुकार नहीं सुनाई देती है? कितना पुकार रहे हैं कि हमारी भावनाओं को पूरा करो, हमारी इच्छाओं को पूरा करो, हमें ये प्राप्ति का अनुभव कराओ। तीन रूप से पुकारते हैं। एक तो इच्छापूर्ति के लिए, दूसरा कोई न कोई प्राप्ति का अनुभव करना चाहते हैं, तीसरा, उनको दर्शन की इच्छा है। तो बाबा कहते कि उनकी भावनाओं को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमारा पुरुषार्थ ये होना चाहिए कि हम प्राप्ति स्वरूप, सम्पन्न स्थिति में स्थित हो जायें। क्योंकि जब मैं प्राप्ति स्वरूप होंगी तभी तो किसी को प्राप्त करा सकूंगी। अगर मैं ही अप्राप्त अपने आपको महसूस करती हूँ तो मैं अनेकों को प्राप्ति कैसे करा सकती हूँ! तो पहले तो अपने स्वरूप को प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप में स्थित करें।

दूसरा जो भक्तों की इच्छा है, उन भक्तों की इच्छा को पूरा करने के लिए मुझे इच्छामात्रम अविद्या स्वरूप में स्थित होना होगा। अगर मेरी ही इच्छायें अभी रही हुई हैं कि ये चाहिए, वो चाहिए, ऐसा चाहिए, वैसा चाहिए, मेरी ही इच्छायें अभी रही हुई हैं तो उन भक्तों की इच्छाओं को हम पूरा कैसे करेंगे! तो इसीलिए बाबा जो कहते हैं एक तो अपना सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप, दूसरा इच्छा मात्रम अविद्या स्वरूप। जब ये स्वरूप होगा तब भक्तों को हम अनुभव करा सकेंगे। तो ये दो स्वरूप को इमर्ज करना होगा। जब उनकी भावना पूर्ण होगी उन्हें अनुभव होगा तो उनकी जो प्रसन्नता है वो प्रसन्नता जैसे पुष्पों की वर्षा हमारे ऊपर करेगी स्वतः। जिस तरह से कभी कोई व्यक्ति जाता है, महान व्यक्ति अगर गुज़रता है तो लोग उस पर पुष्पों की वर्षा करते हैं। ठीक इसी तरह जब हम किसी की प्राप्तियों को पूरा करेंगे, इच्छाओं को पूरा करेंगे, तो वो प्रसन्न होकर हमारे ऊपर पुष्प वर्षा करेंगे ना! तो इसीलिए बाबा कहते तुमको भक्तों की पुकार सुनाई देनी चाहिए। उनकी भावनाओं को पूर्ण करने के लिए ये दो पुरुषार्थ विशेष होने चाहिए।

> **बाबा कहते कि उनकी भावनाओं को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमारा पुरुषार्थ ये होना चाहिए कि हम प्राप्ति स्वरूप, सम्पन्न स्थिति में स्थित हो जायें। क्योंकि जब मैं प्राप्ति स्वरूप होंगी तभी तो किसी को प्राप्त करा सकूंगी।**

पाँचवा पुरुषार्थ, बाबा हमेशा हम बच्चों को कहते हैं कि जैसे विष्णु के जो चारों हाथों में चार अलंकार दिखाये तो बच्चे दिव्य दर्शनीयमूर्त बनने के लिए आपने चारों अलंकार धारण कर लिए हैं? क्योंकि ये अलंकार देवताओं के तो हैं नहीं। ये अलंकार किसके हैं? हम बच्चों के हैं। तो बाबा कई बार मुरली में कहते हैं कि एक अलंकार पकड़ने जाते हैं तो दूसरा छूट जाता है, दूसरा पकड़ने जाते हैं, तीसरा छूट जाता है। चारों ही अलंकारधारी बनो। चारों अलंकार को पकड़ो। तभी तो आप साक्षात्कारमूर्त बन औरों को अनुभव करायेंगे।

तो चारों ही अलंकार में सबसे पहला है शंख, तो जो बाबा का परिचय सबको सुनाते रहते हैं, शंख ध्वनि तो चलती रहती है चलते-फिरते भी। दूसरा कमल पुष्प समान जीवन तो है ही है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं तो सभी ने पवित्रता को धारण किया है। माना कमल पुष्प भी पकड़ा है। तो दो अलंकार तो पकड़े हैं। और तीसरा है ज्ञान की गदा। तो मुरली भी कभी मिस नहीं करते हैं। मुरली भी रोज़ सुनते हैं। तो तीन अलंकार तो पकड़े हुए ही हैं सबने। रह गया तो कौन-सा रह गया? स्वदर्शनचक्र। ये घूमता नहीं है। स्वदर्शनचक्र ही छूट जाता है हमारा। और बाबा रोज़ लगभग साकार मुरली के अन्दर कहते हैं बच्चे स्वदर्शनचक्रधारी बनो। स्वदर्शनचक्र को घुमाओ। क्यों घुमाने के लिए कहता है? उससे क्या होगा? तो बाबा ने कई मुरलियों में सुनाया है कि बच्चे जितना स्वदर्शनचक्र को घुमायेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। जितना स्वदर्शनचक्र को घुमायेंगे आत्मा पावन बनती जायेगी। - क्रमशः

सेल्फ हेल्प

मेडिटेशन का मर्म देखो क्या, आपको ध्यान लगाना नहीं है ध्यान हटाना है। जिन-जिन चीज़ों पर हमारा ध्यान लगा हुआ है जैसे घर पर, बिज़नेस पर, पैसे पर, बच्चों पर जिस पर भी हमारा ध्यान लगा हुआ है। जब हमको ध्यान में आता है तो हमारा ध्यान बंट जाता है और जब हमारा ध्यान बंट जाता है तो हम सारे रात भी उनके बारे में सोचते हैं और दिन में भी उनके बारे में सोचते हैं। तो ध्यान या योग हमको ये सिखाता है कि कैसे मुझे इन सारी बातों से ध्यान हटाना है फिर परमात्मा में लगाना है। तो सबसे ज़्यादा इम्पॉर्टेंट या महत्त्वपूर्ण है ध्यान हटाना न कि लगाना। जैसे और-और चीज़ों से ध्यान हट जायेगा तो ध्यान ऑटोमेटिकली लग जायेगा। इस तरह से हम अपने आपको सिक्योर, सेफ, और उम्दा बना सकते हैं। तो ध्यान को आसान बनायें और इसे अपने जीवन में अपनाकर इसका सुख लें। और इससे बेहतर और कुछ हो नहीं सकता।

> **ध्यान हटाना है न कि लगाना है...**

ग्वालियर-माधवगंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग एवं शिक्षा प्रभाग द्वारा प्रभु उपहार भवन सेवाकेंद्र में आयोजित बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के दूसरे और तीसरे दिन के कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. डॉ. गुरचरण सिंह, पीएचई के पूर्व सब इंजीनियर बी.के. गुप्ता, ज्योति बंसल,जिला अध्यक्ष,वैश्य महा सम्मेलन महिला इकाई, नीलम माहेश्वरी,सदस्य,माहेश्वरी महिला मंडल, प्रेरक वक्ता ब्र.कु. प्रहलाद भाई एवं ब्र.कु. महिमा बहन ने बच्चों का विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया। साथ ही कार्यक्रम में ब्र.कु. पवन, ब्र.कु. सुरभि, ब्र.कु. रोशनी, ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. कंचन व ब्र.कु. रीता ने बच्चों को शिक्षाप्रद एक्टिविटीज़ व गेम्स कराये। कैम्प में लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया जिन्हें प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

राजनांदगांव-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेंद्र वरदान भवन लालबाग द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु आयोजित छः दिवसीय 'संस्कारों की पाठशाला' समर कैम्प के शुभारंभ अवसर पर यातायात प्रभारी अजय कुमार खेस, सहायक यातायात प्रभारी कमल किशोर श्रीवास्तव, सहायक यातायात प्रभारी येनलाल चंद्राकर, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन, वरिष्ठ राजयोगी चैतराम वर्मा व अन्य भाई-बहनों सहित 100 से भी अधिक बच्चे और उनके माता-पिता उपस्थित रहे।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य दर्शन भवन में मातृ दिवस एवं अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के कार्यक्रम के पश्चात समूह चित्र में रेलवे हॉस्पिटल से वरिष्ठ नर्सिंग अधीक्षक हेमंत राठौड़, मुख्य नर्सिंग अधीक्षक गिरिराज राठौड़, सिस्टर मल्लिका, सिविल अस्पताल से सिस्टर आरती कुशवाह, होम्योपैथी डॉ. श्वेता जोशी, शिक्षिका डिंपल टाक, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. गीता दीदी एवं अन्य बहनें, मातायें व भाई।

खजुराहो-म.प्र.। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित 100 दिन योग दिवस के कार्यक्रम के अंतर्गत ओम अर्हम सोशल वेलफेयर फाउंडेशन एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित विशाल योगशाला में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भाई-बहनें, नगर परिषद अध्यक्ष पप्पू अवस्थी, राजनगर नगर पालिका अध्यक्ष जीतू वर्मा, मतंगेश्वर सेवा समिति के अध्यक्ष सुधीर शर्मा, सीआईएसएफ की डायरेक्टर बहन उर्वशी, जैन महात्मा श्री प्रमाणसागर महाराज तथा पत्रकार बंधुओं सहित बड़ी संख्या में युवा एवं शहर के लोग शामिल हुए।

तुमसर-महा.। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित पाँच दिवसीय 'मूल्य जागृति' बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में प्रो. प्रतिभा पटले, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शक्ति दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने विभिन्न विषयों पर बच्चों का मार्गदर्शन किया और विभिन्न एक्टिविटीज़ कराई।

जबलपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन सेवाकेंद्र में विश्व परिवार दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भावना दीदी। मंचासीन हैं संभा सिवा राव,वाइस चांसलर,मंगलायतन यूनिवर्सिटी व कमलेश अग्रवाल,भाजपा नेता।

स्वास्थ्य

मूंग दाल खाने के बेमिसाल फायदे

मूंग दाल के स्वास्थ्य लाभ

वेट लॉस - मूंग दाल में कैलोरी की मात्रा बहुत कम पाई जाती है, जो वजन को कंट्रोल करने में मदद कर सकती है। इसे आप दाल और खिचड़ी के रूप में खा सकते हैं।

एनर्जी - मूंग दाल में आयरन, पोटैशियम, कैल्शियम, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स और प्रोटीन जैसे तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर की कमज़ोरी को दूर करने और एनर्जी को बूस्ट करने में मदद कर सकते हैं।

कोलेस्ट्रॉल - शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ने पर मूंग दाल का सेवन लाभकारी माना जाता है। मूंग दाल के सेवन से अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल को शरीर से हटाने में मदद मिल सकती है।

पाचन - मूंग दाल को पाचन के लिए सबसे अच्छा माना जाता है क्योंकि ये आसानी से पच जाती है। पाचन क्रिया को बेहतर रखने के लिए आप मूंग दाल को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। मूंग दाल से पेट की गर्मी को भी दूर किया जा सकता है।

इम्युनिटी - मूंग दाल को इम्युनिटी के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। मूंग दाल में पाए जाने वाले पोषक तत्व इम्युनिटी को बूस्ट करने में मदद कर सकते हैं।

ब्लड प्रेशर - दाल में भरपूर मात्रा में फाइबर, पोटैशियम और मैग्नीशियम होता है। फाइबर आंतों से गंदगी को बाहर निकालने और ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है।

दाल सेहत के लिए बहुत फायदेमंद मानी जाती है, फिर चाहे आप जिस भी दाल का सेवन करें, दाल को प्रोटीन का सबसे अच्छा सोर्स माना जाता है, जो वेजिटेरियन की डाइट में ज़रूर शामिल होना चाहिए। पौष्टिक गुणों की वजह से ही दाल का अधिक से अधिक सेवन करने की सलाह दी जाती है। मूंग की दाल को अन्य दालों से ज़्यादा फायदेमंद माना जाता है। मूंग दाल में कॉपर, फोलेट, राइबोफ्लेविन, विटामिन, विटामिन सी, फाइबर, पोटैशियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, आयरन, विटामिन बी 6, नियासिन, थायमिन पाया जाता है। फाइबर आंतों से गंदगी को बाहर निकालने में मदद करता है और इम्युनिटी को मजबूत बनाने का भी काम करता है। मूंग की दाल को आप अपनी डाइट में कई तरह से शामिल कर सकते हैं- जैसे दाल, स्प्राउट्स, हलवा, खिचड़ी आदि।

रीवा-म.प्र.। कृष्णा राज कपूर ऑडिटोरियम में बीना क्षेत्र के गणमान्य बुद्धिजीवियों की उपस्थिति में ब्रह्माकुमारीज़ रीवा की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी को 'विंध्य गौरव मातृशक्ति सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान दीदी को डीसेंट डांस ग्रुप के डायरेक्टर राजीव वर्मा, अग्रवाल संघ के अध्यक्ष डॉ. सुनील अग्रवाल, गोवर्धन फाउंडेशन के संरक्षक अविराज चौथवानी, एकता वर्मा, डांस एकेडमी के डायरेक्टर राकेश वर्मा एवं अन्य गणमान्य विभूतियों द्वारा प्रदान किया गया। इसके साथ ही राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने विंध्य की अनेक हस्तियों को विश्व मातृ दिवस एवं विश्व नर्सिंग डे के अवसर पर ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में डॉ. आरती सक्सेना, डॉ. विभा श्रीवास्तव, श्रीमती मंजू सिंह पूर्व जनपद अध्यक्ष रायपुर कर्चुलियान, डॉ. मोनिका सिंह आयुर्वेदिक डॉक्टर, मेगा पॉवर मध्य प्रदेश बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य, अनुराधा श्रीवास्तव, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. ज्योत्सना सिंह, संध्या गौतम, डॉ. रचना श्रीवास्तव, डॉ. सविता एंगल, रीता तिवारी, अन्नपूर्णा समूह, अंजली सिंह एवं पार्टी, जिला नर्सिंग एसोसिएशन की अध्यक्ष श्रीमती अंबिका तिवारी, शशि प्रभा सिंह, पुष्पा वर्मा प्रिंसिपल, अर्चना पांडे, ब्र.कु. नम्रता बहन, ब्र.कु. किरण बहन, ब्र.कु. गीता शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर स्मृति वन में आयोजित जनजागरण कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. गायत्री बहन, मेडिकल प्रभाग के ट्रेनर डॉ. राकेश गुप्ता, विद्युत उपभोक्ता फोरम बिलासपुर के अध्यक्ष भूषण वर्मा, ब्र.कु. रूपा बहन, ब्र.कु. ईश्वरी बहन व बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। इस मौके पर मॉर्निंग वॉक में आने वाले बच्चे, युवा व बुज़ुर्ग सभी को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक किया गया व नशे से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई गई।

खजुराहो-म.प्र.। मातृ दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम बमीठा सेवाकेंद्र में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. विद्या बहन तथा गांव की महिलायें।

नवी मुम्बई-वाशी। मातृ दिवस के कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन भाई, ब्र.कु. ई.वी. गिरीश भाई, डॉ. सुरेखा पाटील, कॉर्पोरेटर शिल्पा मोरे, वर्षा बगाडे, ब्र.कु. शुभांगी बहन एवं शहर की अनेक गणमान्य महिलाएं शामिल रहीं।

अलकापुरी-वडोदरा(गुज.) अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर आयोजित 'नर्सेस सेमिनार' में डॉ. हार्दिक गजेरा, ब्र.कु. डॉ. निरंजना दीदी, डॉ. आशीष बाविसी, डॉ. दिनेश शाह, डॉ. सोना मित्रा, डॉ. वीरेन पटेल, डॉ. करण शाह, डॉ. वैभव शाह, ब्र.कु. नरेन्द्र भाई, ब्र.कु. धरती बहन, मेट्रनस, प्रिंसिपल, नर्सिंग कॉलेज एवं बड़ी संख्या में नर्सिंग स्टाफ शामिल रहे।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग एवं स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में साप्ताहिक नशा मुक्ति प्रदर्शनी का आयोजन पूरे जिले भर में किया जा रहा है जिसका शुभारंभ छत्रसाल चौराहा स्थित श्रमिक प्रतीक्षालय और मोटे के महावीर मंदिर से किया गया। दूसरे दिन छतरपुर जिला अस्पताल में इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस दौरान सिविल सर्जन जी.एल. अहिरवार, ई.एन.टी. स्पेशलिस्ट डॉ. शरद चौरसिया, जिला नोडल अधिकारी तम्बाकू नियंत्रक एवं दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक नोगरिया, डेंटिस्ट डॉ. मुकेश दांगी, डॉ. दीपशिखा, डॉ. प्रियंका, डॉ. अभय सिंह, फिज़ियोथैरेपिस्ट अरुण गुप्ता व समस्त स्टाफ सहित ब्रह्माकुमारीज़ के हरपालपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. कल्पना, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. नम्रता व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

बिजावर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय समर कैम्प में द्वितीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती मीनल श्रीवास्तव, प्रो. राघवेंद्र, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन व अन्य भाई-बहनों सहित 40 बच्चे शामिल रहे। कैम्प में सभी बच्चों का विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया गया व विभिन्न एक्टिविटीज़ कराई गई।

तिल्दा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तिल्दा रेलवे स्टेशन पर विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर लोगों को जागरुक करने हेतु आयोजित चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए रेलवे टिकट अधिकारी रविंद्र जी, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स के अधिकारी गण, ब्र.कु. कांति तथा अन्य भाई-बहनें।

मालिया हाटीना-गुज.। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आयोजित 'समर कैम्प' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए तालुका भाजपा प्रमुख राजेश भालोड़िया, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रमुख महेन्द्र गांधी, सरकारी हाईस्कूल की प्रिंसिपल शीतल कारिया, योग कोच किरण कारिया तथा ब्र.कु. मीता बहन।

दूसरों को माफ करें और हिसाब-किताब साफ करें

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

चलिए आज थोड़ा आत्म विश्लेषण करते हैं। एक बार देखिए कि आपने कितनी बातें पकड़कर रखी हुई हैं। 'इसने वो किया, इसने उस दिन मेरे साथ ऐसा किया, उसने पिछले साल ऐसा किया, उसने उस दिन बुलाया था, ठीक से बात नहीं की, उस दिन उसने फोन नहीं किया...'। ऐसी न जाने कितनी सारी बातें हैं, जिन्हें हमने मन में पकड़कर रखा हुआ है। अब अपने आप से पूछिए कि इसमें से कौन सी ऐसी बात है, जो मेरे साथ आगे जाने लायक है। अगर नहीं है तो खत्म कब करना होगा? शरीर तो कभी भी छूट सकता है। इसका मतलब ये नहीं कि हम सारा दिन सोचते रहें कि मैं मरने वाला हूँ, नहीं। इसका मतलब है कि हम सदा तैयार रहते हैं कि आत्मा किसी भी क्षण शरीर छोड़ सकती है। इसलिए मुझे जो कुछ यहां छोड़ना है। वो अभी छोड़ना है। मुझे समय नहीं मिलेगा बीच में छोड़ने के लिए। अगर मैंने शरीर छोड़ने से पहले उन बातों को नहीं छोड़ा, तो वो बातें मेरे साथ जाती हैं। और नया भाग्य उन बातों के साथ शुरू होता है।

इसीलिए पंडित जी कहते हैं वैसे तो सब कुछ अच्छा है लेकिन ये साल बहुत भारी है। ये चार साल बहुत भारी हैं, फिर अगला साल बहुत भारी है। ये जो सारे भारी साल आते हैं ये वो वाले साल होते हैं, जो हम भारी बातों को पकड़कर लाए थे। क्योंकि उन बातों को खत्म करने का हमें समय ही नहीं मिला। अगर खत्म करने का समय मिला तो हमने खत्म नहीं किया। क्योंकि जिस बात को हम खत्म नहीं कर पाए, उन्हें साथ जाते समय भी खत्म नहीं कर पाएंगे। ये निश्चित है।

संस्कार जाते समय पैदा नहीं किए जाते। वो जीते हुए हमारे पास होने चाहिए। लेकिन उसके लिए हर रोज़ परमात्मा का जो सबसे बड़ा तोहफा हमें मिलता है वो है ज्ञान। जैसे हमारी सबसे बड़ी गिफ्ट जो हमारे बच्चों को मिलती है, वो होती है हमारी राय, हमारी समझ, हमारे अनुभव। आप अपने बच्चों को क्या कहते हैं गलती मत कर, मेरे अनुभव से सीख ले। वो ऐसे प्यार से सुनता है फिर वो अपनी करने लग जाता है। परमात्मा हमें ज्ञान देते हैं लेकिन ज्ञान के साथ हमें चाहिए शक्ति। उस ज्ञान को धारण करने के लिए। क्या ये संभव है कि कोई हमारे साथ गलत करे हम उनको दुआएं दें?

ये सुनने में थोड़ा अव्यावहारिक लग सकता है। पर गहराई से चिंतन करने पर आपको जवाब मिल जाएगा। सामने वाले ने आपके साथ गलत किया, लेकिन उसके रिटर्न में क्या हमने दुआएं देकर श्रेष्ठ कर्म किया? हमने ऊपर तौर पर कोई जवाब नहीं दिया। मतलब गलत नहीं बोला, पर क्या मन में भी गलत नहीं सोचा? इससे भी आगे की बात कि क्या आप उससे दुःखी नहीं हुए, परेशान नहीं हुए, दर्द नहीं हुआ, और सबसे ज़रूरी बात कि क्या उसको शुभभावना और दुआएं देकर श्रेष्ठ कर्म किया। क्या ये संभव है। इसका अभ्यास अभी से करें। आंखे बंद करें एक मिनट के लिए और सीधा बैठें। उस आत्मा को सामने लेकर आएं। चेहरा नहीं लाना, रिश्ता भी नहीं, सिर्फ आत्मा है वो। मैं आत्मा हूँ, वो आत्मा है। इन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया। मेरे पिछले कर्मों का इनके साथ हिसाब-किताब था। आज मुझ आत्मा को उस हिसाब - किताब को बदलना है।

हमेशा याद रखना है गांठें अगर मन में बनाकर रखीं और जब आत्मा शरीर छोड़ेगी तो गांठे साथ ही जाएंगी। वो जो आज हमें तंग कर रहे हैं ये वो ही हैं, जिनके साथ पिछली बार हम गांठें खोलकर नहीं आए थे। इसलिए तो वो हमारे सामने आए हैं। अगर हम इस बार भी गांठें नहीं खोलेंगे, अगर इस बार भी हम दुआएं देकर हिसाब-किताब को ठीक नहीं करेंगे तो हम फिर मिलेंगे और जब हम फिर मिलेंगे तो मुश्किलें इस बार से भी ज़्यादा बढ़ी हुई होंगी। हिसाब-किताब कैरी फॉरवर्ड-कैरी फॉरवर्ड होता जा रहा है। खोलो उसको एक सेकंड में पूर्ण विराम लगाओ और खत्म करो। गलती चाहे कितनी भी बड़ी हो। दुआ और क्षमा एक संकल्प है ना।

आज आप एक होमवर्क करिए। पहला, अपने जीवन की प्राथमिकता अपने कर्म और अपने संस्कारों को बनाएं। लोग हमेशा हमारे साथ परफेक्ट व्यवहार नहीं करेंगे। लेकिन याद रखिए, वो तमाम बातें या लोग हमारे साथ नहीं जाने वाले हैं, जो उन्होंने आज किया वो भी साथ नहीं जाने वाला है। लेकिन उनके बारे में हमने जो आज सोचा वो भी नहीं साथ जाने वाला है। क्या ये संभव है कि कोई हमारे साथ गलत करे और हम उनके लिए अच्छा सोचें? क्या ये संभव है कि कोई हमारे साथ गलत करें हम उनको दुआएं दें? इस पर विचार करें क्योंकि इसी से आपका जीवन बदलेगा।

सिंगरौली-विंध्यनगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के उपक्षेत्रीय मुख्यालय तपोवन कॉम्प्लेक्स नवजीवन विहार में बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु आयोजित 'संस्कार सृजन' समर कैम्प के आठवें दिन 'मेरा देश, मेरी शान-मेरी संस्कृति, मेरी पहचान' विषय पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विधायक राम निवास शाह,बैढ़न, व्यापारी राम कुमार गुप्ता, ग्वालियर से ब्र.कु. ज्योति बहन, मोरवा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अंजू बहन, भोपाल से ब्र.कु. दीपेन भाई, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शोभा बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

पन्ना-म.प्र.। मातृ दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमती मीना पांडे,नगर पालिका अध्यक्ष, श्रीमती निशा जैन,एक्सीलेंस स्कूल प्रिंसिपल(पूर्व), श्रीमती कविता बहन,निरंकारी मिशन, ब्र.कु. सीता बहन,सेवाकेंद्र संचालिका तथा अन्य।

बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव अनुराग भवन सेवाकेंद्र में चल रहे बाल संस्कार शिविर 'उड़ान' के समापन पर समूह चित्र में ब्र.कु. गायत्री बहन, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. गौरी बहन, ब्र.कु. प्रीति बहन व अन्य ब्र.कु. बहनें तथा प्रतिभागी बच्चे। इस मौके पर सभी बच्चों को समर कैम्प का प्रमाण पत्र, उड़ान मग और प्रसाद देकर सम्मानित किया गया।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्व भवन सेवाकेंद्र में 'हमर खून बचाही ज़िंदगी अभियान' के अंतर्गत रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ शासकीय मेडिकल कॉलेज अम्बिकापुर के अधिष्ठाता रामनरेश मूर्ति, समस्त ब्लड बैंक स्टाफ एवं सरगुजा संभाग की सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

रशिया-सेंट पीटर्सबर्ग। ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर,लाइट हाउस में 'यूथ फॉर ट्रांसफॉर्मेशन' विषय पर आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम के तहत 'शिक्षा में मूल्यों के बारे में संवाद' में रूसी संघ के राष्ट्रपति के अधीन रूसी एकेडमी ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सिविल सर्विस के विभाग प्रमुख अनातोली लिखतिन, सेंट पीटर्सबर्ग में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग के सचिव ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग अध्यक्ष डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, सेंट पीटर्सबर्ग मेडिकल अकादमी के पूर्व रेक्टर,प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ,लेखक और विज्ञान प्रशासक प्रो. अलेक्ज़ेंडर शाब्रोव, सेंट पीटर्सबर्ग सोशल एंड इकोनॉमिक इंस्टीट्यूट की रेक्टर,महिला गठबंधन की अध्यक्ष ऐलेना कलिनिना, सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजीज़ एंड डिज़ाइन के अध्यक्ष,पूर्व ओलम्पिक चैम्पियन एवं साइकिल रेसिंग में विश्व चैम्पियन प्रो. विक्टर रोमानोव सहित अन्य प्रतिष्ठित लोग शामिल रहे।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

परमात्म ऊर्जा

मास्टर बीजरूप की स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करते-करते सहज इस स्मृति में अपने आपको स्थित कर सकते हो? जैसे विस्तार और वाणी में सहज ही आ जाते हो, वैसे ही वाणी से परे विस्तार के बजाय सार में स्थित हो सकते हो? हद के जादूगर विस्तार को समाने की शक्ति दिखाते हैं। तो आप बेहद के जादूगर विस्तार को नहीं समा सकते हो? कोई भी आत्मा सामने आवे, साप्ताहिक कोर्स एक सेकण्ड में किसको दे सकते हो? अर्थात् साप्ताहिक कोर्स से जो भी आत्माओं में आत्मिक शक्ति व सम्बन्ध की शक्ति भरने चाहते हो वह एक सेकण्ड में कोई भी आत्मा में भर सकते हो व यह अन्तिम स्टेज है? जैसे कोई भी व्यक्ति दर्पण के सामने खड़े होने से ही एक सेकण्ड में स्वयं का साक्षात्कार कर लेते हैं, वैसे आपके आत्मिक स्थिति, शक्ति रूपी दर्पण के आगे कोई भी आत्मा आवे तो क्या एक सेकण्ड में स्व स्वरूप का दर्शन व साक्षात्कार नहीं कर सकते हैं?

वह स्टेज बाप समान लाइट हाउस और माइट हाउस बनने के समीप अनुभव करते हो व अभी यह स्टेज बहुत दूर है? जबकि सम्भव समझते हो तो फिर अब तक ना होने का कारण क्या है? जो सम्भव है, लेकिन प्रैक्टिकल में अब नहीं है तो ज़रूर कोई कारण होगा। ढीलापन भी क्यों है? ऐसी स्थिति बनाने के लिए मुख्य कौन से अटेन्शन की कमी है? जब साइंस ने भी अनेक कार्य एक सेकण्ड में सिद्ध कर दिखाये हैं, सिर्फ स्विच ऑन और ऑफ करने की देरी होती है। तो यहाँ वह स्थिति क्यों नहीं बन पाती? मुख्य कौन-सा कारण है? दर्पण तो हो। दर्पण के सामने साक्षात्कार होने में कितना टाइम लगता है? अभी आप स्वयं ही विस्तार में ज़्यादा जाते हो। जो स्वयं ही विस्तार में जाने वाले हैं वह और कोई को सार रूप में कैसे स्थित कर सकते? कोई भी बात देखते या सुनते हो तो बुद्धि को बहुत समय की आदत होने कारण विस्तार में जाने की कोशिश करते हो। जो भी देखा व सुना उसके सार को जानकर और सेकण्ड में समा देने का व परिवर्तन करने का अभ्यास कम है। "क्यों, क्या" के विस्तार में ना चाहते भी चले जाते हो। इसलिए जैसे बीज में शक्ति अधिक होती है, वृक्ष में कम होती है, वृक्ष अर्थात् विस्तार। कोई भी चीज़ का विस्तार होगा तो शक्ति का भी विस्तार हो जाता। कोई भी बात के विस्तार में जाने से समय और संकल्प की शक्ति दोनों ही व्यर्थ चली जाती हैं। व्यर्थ जाने के कारण वह शक्ति नहीं रहती। इसलिए ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए सदा यह अभ्यास करो।

कथा सरिता

एक सफल व्यक्ति

एक बार मुम्बई के हलचल भरे शहर में, राज नाम का एक लड़का रहता था। राज एक विनम्र परिवार से तालुक रखते थे। जो गुज़ारा करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता था। अपनी वित्तिय चुनौतियों के बावजूद राज के बड़े सपने थे और सफलता की, एक न बुझने वाली प्यास थी।

एक दिन, सड़कों पर घूमते हुए राज को एक छोटी-सी किताबों की दुकान मिली। जैसे ही उन्होंने प्रवेश किया पुरानी किताबों की सुगंध उनके होश में भर गई और उन्होंने साहित्य की दुनिया के साथ एक अकथनीय जुड़ाव महसूस किया। राज ने स्टोर के मालिक से संपर्क किया और पूछा कि क्या वह किताबों को पढ़ने के अवसर के बदले में वहाँ पार्ट टाइम काम कर सकते हैं।

युवा लड़के के उत्साह से प्रभावित होकर, उस दुकान के मालिक राज को नौकरी पर रखने के लिए तैयार हो गए। स्कूल के बाद हर दिन, राज किताबों की दुकान पर भागता, उत्सुकता से ज्ञान को अवशोषित करता और महान लेखकों की करामाती कहानियों में खुद को खो देता।

हर बीतते दिन के साथ किताबों के लिए उनका प्यार और गहरा होता गया, उनके भीतर महत्वाकांक्षा की एक चिंगारी भड़क उठी। एक शाम, जब राज एक सफल उद्यमी के जीवन के बारे में एक किताब में पढ़ा तो हमेशा के लिए उनके दृष्टिकोण को बदल दिया।

इन शब्दों से प्रेरित होकर, राज ने महसूस किया कि अगर वह अपने सपनों को हासिल करना चाहता है तो उसे अपनी शंकाओं और सीमाओं को दूर करना होगा। नए दृढ़ संकल्प के साथ, उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने का फैसला किया, यह जानते हुए भी कि इससे उनके परिवार पर आर्थिक बोझ पड़ेगा।

राज ने अथक परिश्रम किया, देर रात तक पढ़ाई करता था और उनका समर्पण तब रंग लाया जब उन्होंने देश के बहुत बड़े विश्व विद्यालयों में छात्रवृत्ति प्राप्त की। जैसे ही उन्हें यह खबर मिली, वह इसे अपने परिवार के साथ साझा करने के लिए दौड़ पड़े।

उनके चेहरे से खुशी के आंसू छलक पड़े, तब उन्हें लगा कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया है। विश्वविद्यालय में अपने समय के दौरान, राज को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा और संदेह के क्षणों का सामना करना पड़ा। हालाँकि, वह उस उद्धरण को कभी नहीं भूले जो उनका मंत्र बन गया था। वह रातों की नींद हराम, कोर्स वर्क की मांग और नौकरी के साक्षात्कार से अनगिनत अस्वीकृति के माध्यम से दृढ़ रहे। राज जानता था कि असफलताएं सफलता की सीढ़ियां बन रही थीं।

अंत में कई परीक्षणों और क्लेशों के बाद, राज का अटूट दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत रंग लाई। उन्हें मुंबई की एक प्रतिष्ठित कंपनी में नौकरी मिली, जहाँ उनकी प्रतिभा और समर्पण को पहचाना गया। इन वर्षों में, वह कॉर्पोरेट सीढ़ी पर चढ़े और उनकी विनम्र शुरुआत ने उनकी यात्रा की निरंतर याद दिलाई।

राज उस छोटी-सी किताबों की दुकान को कभी नहीं भूले जिसने उनकी ज़िंदगी बदल दी थी। वह उस दुकान पर लौटे और इसे खरीद लिया, जिससे यह इच्छुक पाठकों और लेखकों के लिए एक जीवंत केन्द्र बन गया। उन्होंने साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए खुद को समर्पित कर दिया, वंचित बच्चों को किताबों के जादू की खोज करने के अवसर प्रदान किए जैसा कि उनके पास था।

आज राज की कहानी पूरे भारत में अनगिनत व्यक्तियों के लिए एक प्रेरणा है। वह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि दृढ़ता, दृढ़ संकल्प और स्वयं में विश्वास के साथ, यहाँ तक कि सबसे चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों को भी दूर किया जा सकता है।

गंजाबरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर नर्सेज़ डे के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल सुपरिटेंडेंट चम्पा बर्मन, डेप्युटी सुपरिटेंडेंट मजन हॉस्पिटल अदिति धर, मउत्रिसा बेरा,डीएनएस मजन हॉस्पिटल, तनुदीपा बार,डीएनएस मजन हॉस्पिटल, ब्र.कु. भानू भाई,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बहन-भाई तथा सभी नर्सेज़।

इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के अनुभूति भवन में आयोजित चार दिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के दौरान डॉ. अंतिम जैन,एक्युप्रेशर,नेचुरोथैरेपी एक्सपर्ट एवं अध्यक्ष इंटरनेशनल नेचुरोथैरेपी ऑर्गनाइज़ेशन म.प्र., डॉ. वेनु त्रिवेदी व्यास,प्रोफेसर एवं भूगोलशास्त्र विभागाध्यक्ष,शासकीय आर्ट्स एवं कॉमर्स विश्वविद्यालय इंदौर, विनोद जैन एवं प्रदीप जैन,योगाचार्य, सोनी बलवानी,एचओडी चार्मिंग किड्स इंटरनेशनल स्कूल, ब्र.कु. शशि दीदी,प्रभारी,प्रेमनगर यूनिट, ब्र.कु. यश्वनी दीदी,प्रभारी,उप सेवाकेंद्र बिजलपुर, ब्र.कु. रक्षा दीदी,प्रभारी,उपसेवाकेंद्र राजेंद्र, ब्र.कु. शारदा दीदी व अन्य भाई-बहनों सहित प्रतिभागी बच्चे व उनके माता-पिता शामिल रहे। सभी वक्ताओं ने बच्चों का विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया तथा विभिन्न एक्टिविटीज़, योग प्राणायाम व एक्सरसाइज़ कराई।

गाडरवारा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के लक्ष्मी टाउनशिप प्रभु उपवन भवन में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित दस दिवसीय उमंग समर कैम्प के भव्य समापन समारोह में गाडरवारा क्षेत्र की संचालिका ब्र.कु. उर्मिला बहन, कृष्णायन सेवा समिति के अध्यक्ष श्री कृष्णा महाराज जी, महिला बाल विकास अधिकारी उमा वर्मन, प्राचार्य जगमोहन शर्मा, गिरीश पटेल बी.आर.सी. सांइखेड़ा ब्लॉक, श्रीमती आरती राजपूत स्कूल अध्यापक, नयन शर्मा, ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. अंजना व अन्य भाई-बहनों सहित प्रतिभागी बच्चे व उनके अभिभावक शामिल रहे। इस अवसर पर समर कैम्प के दौरान हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं और खेल स्पर्धाओं के विजेता बच्चों को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया एवं सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

छतरपुर-बिजावर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बिजावर सब जेल में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कैदियों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. अवधेश भाई, ब्र.कु. रचना बहन, ब्र.कु. साधना बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित जेल स्टाफ उपस्थित रहे।

पुनः रामराज्य लाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका : मंत्री खराड़ी

- चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन एवं रिट्रीट का शुभारंभ
- देशभर से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो और वेब मीडिया से जुड़े लोग पहुंचे

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर परिसर में 'नई सामाजिक व्यवस्था के लिए दृष्टि और मूल्य-मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन एवं रिट्रीट में देशभर से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो और वेब मीडिया से जुड़े संपादक और पत्रकार भाग लेने पहुंचे। शुभारंभ पर राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रीय विकास एवं गृह रक्षा विभाग कैबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने कहा कि आज नेता कुर्सी पाने के लिए और सत्ता में आने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। नेताओं का नैतिक पतन चिंता का विषय है। हम उस महान संस्कृति से आते हैं जहां भरत जैसे राजा हुए जिन्होंने 14 वर्ष अपने बड़े भाई श्रीराम के पैरों की खड़ाऊ रख कर शासन चलाया। अब पुनः राम राज्य आएगा, इसे कोई रोक नहीं सकता। किंतु इसमें मीडिया को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

हमें मिलकर राम राज्य लाना है

अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि हमें मिलकर राम राज्य लाना होगा। इसके लिए एक-एक को संकल्प करना होगा। **हमारे संस्कारों से ही रामराज्य और रावण राज्य बनता है। संस्कारों से संसार बनता है। यदि हमारे संस्कार दिव्य, पवित्र होंगे तो रामराज्य आएगा। हमें आग लगाने वाली नहीं आग बुझाने वाली चिड़िया बनना है। हमें समाज को नई दिशा देने वाला पत्रकार बनना है। हमें अपने संस्कारों को दिव्य बनाकर स्वर्णिम संसार लाना है। इसमें हर एक को अपनी सहभागिता निभानी है।**

भारतीय जनसंचार संस्थान के पूर्व महानिदेशक और जाने माने मीडिया गुरु प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम नारद जी को प्रथम संचारक कहते हैं। उनका काम है लोक मंगल। उन्हें सभी प्यार करते हैं। उनकी प्रमाणिक दृष्टि थी, ऐसी ही दृष्टि पत्रकार की होनी चाहिए। पत्रकारिता किसके लिए, कैसी हो, यह बात यहां ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाई जाती है। हमारा जो भी ज्ञान है वह विश्व को सुख देने के लिए है। हमें दूसरों को दोष देना बंद करना होगा। खुद समस्याओं का समाधान ढूंढ़ना होगा। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि हमें अपने श्रेष्ठ कर्मों से फिर से स्वर्णिम भारत बनाना है। मल्टीमीडिया के निदेशक ब्र.कु. करुणा भाई ने कहा कि जब पत्रकार स्वयं मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रहेंगे तो समाज के लिए बेहतर कर पाएंगे। राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सरला आनंद, पूर्व कुलपति मानसिंह परमार, यूके से आए लेखक नेविले होड्गसन व राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. शांतनु भाई ने भी अपने विचार रखे।

राजयोग भवन में 'संस्कार सृजन समर कैम्प' का आयोजन

बच्चों को संस्कारों का निर्माण करने की सुंदर प्रेरणा मिलेगी : रक्षा दुबे

भोपाल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय मुख्यालय राजयोग भवन अरेरा कॉलोनी में आयोजित 10 दिवसीय 'संस्कार सृजन समर कैम्प' के उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती रक्षा दुबे,संयुक्त आयुक्त जीएसटी विजीलेंस डिपार्टमेंट भोपाल ने कहा कि बच्चों को अपने बड़ों से, अपने शिक्षकों से एवं अपने मित्रों से अपनी हर जिज्ञासा का उत्तर ढूंढ़ने के लिए खूब प्रश्न करने चाहिए और जब उन प्रश्नों का उत्तर उन्हें मिले तो उससे संतुष्ट होकर के अपने जीवन में सदा उमंग-उत्साह का संचार करना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए, उड़ते रहना चाहिए। बच्चों को इस कैम्प के माध्यम से अपने संस्कारों का निर्माण करने की सुंदर प्रेरणा मिलेगी ऐसी मेरी शुभकामना है। साथ ही उन्होंने स्वस्थ और अच्छे जीवन के लिए बच्चों को मोबाइल तथा अन्य उपकरणों का सही उपयोग करने पर बल दिया। गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख प्रचारक राजेश पटेल ने कहा कि बच्चे एक मिट्टी के लौंदे की तरह हैं। जैसे एक कुम्हार मिट्टी का बर्तन बनाता है तो अंदर और बाहर दोनों तरफ से थपथपाता है। ऐसे ही मेरी यह शुभकामना है कि इस समर कैम्प के माध्यम से बच्चों के बाहरी व्यक्तित्व के साथ-साथ आंतरिक व्यक्तित्व का भी विकास होगा। व्यवस्थापक रामचंद्र गायकवाड ने कहा कि वन प्लस वन टू तो हम पढ़ते आए, परंतु हम एक और एक 11 भी बन सकते हैं अगर हम एक-दूसरे के अच्छे सहयोगी बनें। हम एक-दूसरे के अच्छे सहयोगी बन करके इस देश का निर्माण कर सकते हैं। ब्र.कु. दीपेन्द्र ने समर कैम्प के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए इस दौरान होने वाली प्रतिस्पर्धाओं और रूपरेखा से सभी को अवगत कराया। ब्र.कु. सरिता बहन ने मंच का कुशल संचालन किया। ब्र.कु. खुशबू बहन ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं बच्चों को कुछ टिप्स बताए ताकि वह समर कैम्प का पूरा सदुपयोग कर सकें। ब्र.कु. संगीता बहन एवं ब्र.कु. ममता बहन ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। ब्र.कु. मोनिका बहन और ब्र.कु. आशीष भाई ने कार्यक्रम के प्रारंभ में बच्चों को शारीरिक व्यायाम एवं योग कराया। कार्यक्रम में 100 से भी अधिक बच्चों ने भाग लिया और सभी ने मिलकर यह प्रतिज्ञा की कि हम पूरे 9 दिनों तक इस समर कैम्प का लाभ लेंगे और देश का एक अच्छा नागरिक बनेंगे।

आशीर्वचन देते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि बच्चों के जीवन में निरंतरता की आवश्यकता है, अनुशासन की आवश्यकता है एवं नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है। अगर बच्चे अपने शांत स्वरूप में स्थित होकर, मन को एकाग्र करके अपने जीवन में इन नैतिक मूल्यों को अपनायें तो वह अपना जीवन तो सुखी बनाएंगे ही परंतु अपने परिवार का, समाज का और देश का भी नव निर्माण करेंगे।

ब्रह्माकुमारी बहनों का त्याग और सेवा सराहनीय है : न.पा. अध्यक्ष

हाथरस-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति भवन, आनंदपुरी कॉलोनी सेवाकेंद्र के वार्षिकोत्सव समारोह तथा ब्र.कु. मीना बहन रामपुर की रजत जयन्ती समारोह का आयोजन केला फार्म में धूमधाम से किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए दिल्ली से आईं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. अनुसूइया दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण यह है कि ईर्ष्या, द्वेष, झूठ आदि जो भी बुराइयां हैं जिसमें संसार लिप्त है उनसे हटकर अच्छाई के लिए समर्पित होना। सब कुछ भगवान का है ऐसा सोचने से सेवा के भाव जागृत होंगे। नगरपालिका अध्यक्ष श्वेता चौधरी ने कहा कि यह परमपिता परमात्मा शिव की ही शक्ति है जो इस संगठन में अच्छाई का विकास करने के लिए इतने लोग सेवाभाव से जुड़ते हैं। इसमें ब्रह्माकुमारी बहनों का त्याग और सेवा सराहनीय है। राजस्व राज्यमंत्री अनूप प्रधान वाल्मीकि ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यहां आकर शान्ति और स्नेह के वातावरण की महसूसता होती है। अच्छाई को बढ़ाने में ब्रह्माकुमारीज़ का विशाल संगठन सारे संसार में भारत के अध्यात्म और राजयोग को फैला रहा है। संगठन से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर रामपुर की ब्र.कु. मीना बहन की रजत जयन्ति के उपलक्ष्य में उनका चुनरी, मुकुट, माला पहनाकर धूमधाम से स्वागत किया गया तथा केक काटा गया। बदायूं सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. करुणा बहन ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार आनंदपुरी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन ने व्यक्त किया। इस मौके पर इगलास की ब्र.कु. हेमलता दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की वार्षिक सेवा की थीम 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा स्वस्थ एवं समृद्ध समाज' का भी शुभारंभ किया गया।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आध्यात्मिक शिक्षा ज़रूरी : हेमलता दीदी

- बच्चों को अच्छे गुणों से संस्कारित करने का यह सही समय : डॉ. राव
- बच्चों के चारित्रिक विकास में ब्रह्माकुमारीज़ का 'समर कैम्प' मददगार : उज्जवल पोरवाल
- नैतिक मूल्यों की धारणा कराएगी लक्ष्य की प्राप्ति... ब्र.कु. सविता दीदी

रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ समर कैम्प का समापन...

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर में 'प्रेरणा समर कैम्प' का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर आयोजित समारोह में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) के निदेशक एन.वी. रमना राव ने समर कैम्प आयोजित करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान समय इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है। बच्चों में अच्छे गुणों और संस्कारों का बीज बोने का यह सही समय है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का उद्देश्य उच्च मानवीय गुणों को जागृत करना है। यहाँ सिखलाया जाने वाला राजयोग तनाव को दूर करने में मददगार सिद्ध हुआ है। उन्होंने बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि इसमें बच्चों में रचनात्मकता की झलक दिखाई देती है। स्मार्ट सिटी रायपुर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी(आईएएस)उज्जवल पोरवाल ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बच्चों के चारित्रिक विकास एवं उनमें एकाग्रता विकसित करने में समर कैम्प मददगार बनेगा। वर्तमान समय शारीरिक और स्कूली शिक्षा के साथ ही आध्यात्मिक शिक्षा पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। आत्मबल नहीं होने के कारण बच्चे सुसाइड करने से नहीं हिचकते। राजयोग से उनके मनोबल में वृद्धि हो सकती है। इन्दौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए बच्चों का सर्वांगीण विकास होना बहुत ज़रूरी है। आजकल बच्चे अल्पकालिक सुख के लिए भौतिक साधनों के पीछे भाग रहे हैं। उनके माता-पिता भी पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण कर रहे हैं। नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा की ओर उनका ध्यान नहीं है। रायपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी ने कहा कि बचपन मूल्यवान समय होता है। इसी समय हम अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जीवन में नैतिक मूल्यों का होना ज़रूरी है। उन्होंने समारोह में उपस्थित माता-पिता से अनुरोध किया कि अपना समय टीवी और मोबाइल में व्यर्थ नष्ट करने की बजाय बच्चों के संग बांटें ताकि बच्चों को प्यार मिले और अपनापन पैदा हो। सुश्री प्रगति दावरा मिरानी और ब्र.कु. भावना दीदी ने भी अपने विचार रखे। संचालन ब्र.कु. सिमरण बहन ने किया। समर कैम्प में विजयी बच्चों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र भी दिया गया।

अन्तरमन की कहानी

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

हम सभी बहुत सारे ऐसे जो प्रेरकवक्ता हैं और यूट्यूब पर बहुत सारे ऐसे मोटिवेशनल स्पीकर्स को सुनते हैं जो हमेशा कहते हैं कि अपने अन्तरमन या अपने सब्कॉन्शियस माइंड को हील करो। अब ये सब्कॉन्शियस माइंड की हीलिंग से आपका पूरा जीवन बदल जायेगा। आप जो चाहते हैं वो हो जायेगा। इसकी पॉवर को जानें आदि-आदि।

बहुत सारी बातें ऐसी हम सुनते हैं। लेकिन आज तक हमने इसकी एक बात को नहीं समझा कि हम सब्कॉन्शियस माइंड को या अपने अन्तरमन को सक्रिय कैसे करें! कैसे इसका उपयोग करें! तो कई बार इस पर एक विचार चलता है मन में कि अन्तरमन जैसे कोई चीज़ एग्ज़िस्ट ही नहीं करती या है ही नहीं। अब ये प्रश्न सुन के आपको लगा होगा कि अभी तक तो सभी ये कहते हैं कि अन्तरमन है। सब्कॉन्शियस माइंड है और आप ये एक नई चीज़ बता रहे हैं। नई चीज़ नहीं है, है पुरानी लेकिन हमने कभी समझा नहीं।

अन्तरमन जो हमारा सब्कॉन्शियस माइंड है इसे आप ऐसे समझो जैसे आपने एक हाथ में घड़ी पहनी है और बहुत लम्बे समय से आप पहनते आये हैं। ये आपका अन्तरमन है। सब्कॉन्शियस माइंड ही है। ये आपको याद नहीं है लेकिन आप नैचुरल कर रहे हो। लेकिन किसी ने आपको कह दिया कि आपने लेफ्ट हैंड में इतने समय से घड़ी पहनी है ना तो अब आप इसको राइट में पहनो, तो आपको फायदा होगा। तो जैसे आपने राइट में पहना ये आपका कॉन्शियस माइंड हो गया या आपका ये चेतन मन

हो गया। वो अवचेतन मन और ये हमारा चेतन मन हो गया। अब अगर आपने इसे लगातार पहना तो आपकी चेतना हो गई। इसका मतलब कॉन्शियसली मैंने इसको पहनना शुरू कर दिया। अब ये सारी बातें बहुत समय से हम जो करते हैं वो हमारा अन्तरमन ही है। लेकिन उसमें थोड़ा-सा भी परिवर्तन करते हैं और चेतना से करते हैं तो उसको हम चेतन मन कहते हैं।

जैसे आप घर के बाहर बैठे हुए हैं और थोड़ी देर बाद आपको नींद आ जाती है और कोई आपके घर में प्रवेश कर जाता है तो प्रवेश करते ही आपको पता नहीं चला लेकिन अगर अन्दर वो चला गया, कुछ नुकसान कर दिया तो कहते कि क्या कर रहे थे, जी सो गये। ऐसे हम सभी अपने जीवन में सोये हुए हैं। हमारे सामने जो हो रहा है, आस-पास जो हो रहा है, इधर-उधर जो हो रहा है ये सब हम देख रहे हैं और ये नैचुरल तरीके से हमारे अन्दर जाता जा रहा है। और हमारा ध्यान उसपर नहीं जाता है। कुछ दिन में जब वो हमारे संस्कारों में आता है तो कहते कि ये मैंने कब किया? ये तो मैंने कभी किया ही नहीं! ऐसे कैसे ये हमारे अन्दर संस्कार बन गये! तो आप इसे इस तरह से समझ लें आज कि एक है मुझे प्यास लगी है, अब प्यास लगी है और आपके सामने पानी का एक गिलास रख दिया जाये तो पानी को देखकर आपकी प्यास नहीं बूझेगी। जब तक आप पानी को पियेंगे नहीं। ऐसे ही भोजन है, भूख लगी है। जब तक भोजन आपके सामने रखा है तो उसको देखकर आपका पेट नहीं भरेगा। भोजन को खाने से पेट भरेगा ना! ऐसे ही हम सबकी स्थिति है।

हरेक चीज़ महसूसता चाहती है, फीलिंग चाहती है। एक फील के साथ कोई चीज़ हम करते हैं तो हमारे अन्दर चला जाता है। तो फिर वो हमारे संस्कारों में आकर हमारे से वही सारी चीज़ें कराता है जो आप चाहते हैं। तो हमारा अन्तरमन, हमारे चेतन मन के साथ काम करता है लगातार। जैसे अगर मैं कोई भी चीज़ को चेतना के साथ करना शुरू करूंगा तो हर दिन जैसे मैंने आज वो काम किया तो कल वो अवचेतन मन हो जायेगा, सब्कॉन्शियस हो जायेगा। फिर आज कुछ अच्छा किया, अगर हर रोज़ कुछ अच्छा-अच्छा करता जाता हूँ तो हर दिन वो हमारा अन्तरमन बनता जा रहा है। और हर दिन जो हमारा अन्तरमन बनता है वही संस्कार ही तो हमें सुख देते हैं। तो क्यों न हम अपने मन में चैतन्य रूप से, कॉन्शियसली इस बात को डालें, बार-बार डालें कि मैं ये हूँ- मैं पॉवरफुल हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ, मैं अच्छा हूँ। लेकिन एक फील के साथ डालना। जैसे आज पानी और भोजन का उदाहरण दिया। उसको फील करके जब डालेंगे तो धीरे-धीरे वही मन आपका बहुत शक्तिशाली आपसे व्यवहार करायेगा। और उसी बात को इतना ज़्यादा आप अनुभव करने लग जाओ जैसे ये हमारा जीवन है।

तो अन्तरमन कुछ नहीं है। हमारा चेतन मन ही हर दिन अन्तरमन हो जाता है। तो चेतन मन ही कभी अन्तरमन है, कभी अन्कॉन्शियस माइंड है, कभी सब्कॉन्शियस माइंड है, कभी कॉन्शियस माइंड है। कॉन्शियस माइंड ही सबकुछ है। और कॉन्शियस माइंड से भी ऊपर एक चीज़ है उसे कहते हैं कॉन्शियसनेस। तो जब मैं एकदम चैतन्यता के साथ जीना शुरू करूंगा, अलर्टनेस के साथ जीना शुरू करूंगा तो हमारा अन्तरमन क्या हमारा जीवन ही बदल जायेगा। तो इस तरह से इस बात को हम इस्तेमाल करके अपने जीवन को बदल सकते हैं।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : सतगुरू बिगड़ी को बनाते हैं, हमारी बिगड़ी को भी क्या वो बनायेंगे? और इसके लिए हमें क्या करना होगा?

उत्तर : पहली चीज़ यही लोगों की कि स्थूल दृष्टि रही है कि काम बिगड़ गया, बिज़नेस बिगड़ गया, बच्चे बिगड़ गये, और कोई उलझने आ गईं उसको ठीक कर दें परमसद्गुरू, ये काम भी उनकी ओर से होता है। लेकिन पहली बात तो ये थी कि हमारा जीवन ही बिगड़ गया। हमारी मानसिक स्थिति बिगड़ गई। हमारी प्युरिटी नष्ट हो गई, मनोविकारों ने हमारे चारों ओर घेराव डाल लिया है। ये बिगड़ी, पहले परमात्मा इस बिगड़ी को बनाते हैं। यानी हमें, यानी मनुष्यात्मओं को, अपने बच्चों को ठीक करते हैं, सुधारते हैं। जब हममें सुधार आ जाता है तो हममें वो पॉवर आ जाती है कि हम अपनी बिगड़ी को बना सकें। और अगर हममें वो पॉवर नहीं आई तो हम योगयुक्त होकर, परमसद्गुरू की मदद प्राप्त करके बिगड़ी को बना लेते हैं। यहाँ हमें बहुत अच्छी साधनायें करनी होंगी। क्योंकि जैसे मैं बार-बार कहता आ रहा हूँ कि कोई मनुष्य अपनी बिगड़ी को लेकर अपने गुरू के पास जाता है, गुरू अपनी शक्ति से वो बात ठीक कर देता है। लेकिन कल फिर उसकी बिगड़ जाती है फिर वो गुरू के पास जाता है, फिर बिगड़ जाती है फिर वो गुरू के पास जाता है। तो एक तरह से ये कमज़ोरी हो गई और गुरू भी कहाँ तक मदद करेगा! कहेगा कि तुम रोज़ ही बिगाड़ कर आ जाते हो, बस पूरा हो गया आपका काम। परमसद्गुरू हमें ऐसा कर देता है- शक्तिशाली बन जाओ, एक तो तुम्हारी बिगड़े ही नहीं और अगर मान लो तुम्हारा भाग्य बिगड़ गया तो उसको तुम ठीक करना जानते हो। वो हमें आर्टिस्ट बना देता है। तुम्हारे चित्र में कोई गड़बड़ाहट आ जाये तो तुम मेरे पास दौड़े न आओ। खुद ही ठीक कर लो।

प्रश्न : गुरू का निंदक ठौर न पाये ऐसा कहा जाता है, कि अगर गुरू की निंदा की तो हमें तीनों लोकों में कहीं भी ठिकाना नहीं मिलेगा। इसीलिए कई लोग डरते हैं कि हमने एक गुरू किया हुआ है यदि हम दूसरे के पास जायेंगे, ज्ञान सुनेंगे, बैठेंगे तो हमारे गुरू की निंदा हो जायेगी और हमें कहीं ठौर नहीं मिलेगा। तो इस बात को थोड़ा स्पष्ट करें।

उत्तर : वास्तव में इस बात से डरने की बात नहीं है। बहुत से लोग अनेक गुरू भी करते हैं, कि हमें एक गुरू से एक तरह की प्राप्ति हुई और दूसरे गुरू से दूसरे तरह की प्राप्ति हुई। इसमें गुरू की निंदा या ग्लानि होने जैसी कोई बात ही नहीं है। इसमें डरने की बात नहीं। लेकिन भगवान का मामला सामने आ गया हो कि वो परमसद्गुरू बनने को तैयार है, और वो उसी रूप में इस धरा पर आ गया है तो उसे ही अपने परमसद्गुरू के रूप में अपना लेना चाहिए। रही बात निंदा की तो निंदा तो ये है कि हम किसी अच्छे व्यक्ति के गुरू के शिष्य हों और हम बुरे काम करते रहें। मान लो अच्छे गुरू का शिष्य है और शराब पीता है तो लोग कहेंगे कि देखा उसके गुरू ने उसे ये भी नहीं सिखाया। तो ये है गुरू की ग्लानि। और परमसद्गुरू की ग्लानि ये है कि उसने पवित्रता का मार्ग दिखाया, उसने प्युरिफिकेशन का मार्ग दिखाया तो हम उसपर चलते रहें। अगर हम उसको तोड़ते हैं तो वो सूक्ष्म रूप में जैसे सद्गुरू की निंदा होती है। और ठौर न मिलना माना उन आत्माओं की सद्गति नहीं होती। अगर किसी को अपने गुरू में बहुत अच्छी भावना है और उनका गुरू सचमुच ग्रेट है और उनको उनसे बहुत कुछ सुख, शांति, आनंद, प्रेम मिल रहा है तो उन्हें छोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि वो भी भगवान की संतान हैं, वो भी अच्छे कार्यों में लगे हुए हैं। अब बात यही है कि उस गुरू के पास भगवान मिलन के लिए जाते थे तो जब भगवान मिलने आ गया हो तो उससे मिलना तो चाहिए ना! फिर गुरू के पास गये थे प्रभु मिलन के लिए, फिर प्रभु मिलन होने लगा तो कहें कि मैं तो गुरू के पास ही रहूँगा, प्रभु मिलन नहीं। तो फिर ये तो बहुत बड़ी मिस्टेक हो गई। तो भले ही गुरू को सम्मान दो, उनकी आज्ञाओं पर चलो, उनसे अपना नाता रखो, लेकिन परमसद्गुरू की दिखाई गई राह पर चलने से बहुत महान बन जायेंगे और सर्व श्रेष्ठ गति जिसको मुक्ति या जीवन मुक्ति कहते हैं उसके अधिकारी बनेंगे। कई लोग ये बात भी उठाते हैं कि हमारे गुरू जो ज्ञान देते हैं वो ही ज्ञान हमें यहाँ दिया जा रहा है। वो भी हमें अच्छाई की ओर ले चलते हैं। यहाँ पर भी अच्छाई का मार्ग दिया जा रहा है तो लोग थोड़ा-सा डिफ्रेंस नहीं कर पाते कि जो ज्ञान वहाँ मिल रहा है वही तो यहाँ मिल रहा है तो फिर सबकुछ छोड़ने की क्या ज़रूरत है। बात सिर्फ ज्ञान मिलने की नहीं है। देखिये ज्ञान को कोई अगर गहराई से अध्ययन करेगा तो उनको पता चलेगा कि वहाँ जो ज्ञान दिया जा रहा था वो ज्ञान जहाँ समाप्त हो गया वहाँ से परमसद्गुरू का ज्ञान प्रारम्भ होता है। मोटे रूप से लोग देखते हैं कि वो भी कहते हैं कि विकारों को छोड़ो, अच्छे कर्म करो, यहाँ भी वही बात कही जा रही है। ये तो बाह्य स्वरूप है केवल ज्ञान, ईश्वरीय ज्ञान जो स्वयं भगवान दे रहे हैं। देखिए भगवान जब गाइड करेगा तो उनकी गाइडेन्स वो नहीं होंगी जो मनुष्य कर रहे हैं, वो उनसे सुपर क्वालिटी की हो जायेगी। इसलिए वो बात नहीं है, ज्ञान की बहुत अच्छी तरह स्टडी करें तो पता चलेगा कि बहुत गुह्य ज्ञान परमसद्गुरू से मिल रहा है उसे अपनाने से वो ज्ञान भी जो वहाँ मिल रहा था उसको जीवन में धारण करना सहज हो जाता है। बात यही होती है। मान लो वही ज्ञान दिया भी जा रहा हो तो कौन से ज्ञान को हम जीवन में अपना पा रहे हैं, किसकी आज्ञाओं पर चलकर हम अपने जीवन को निर्विकारी बना रहे हैं और किसकी आज्ञाओं पर चलकर हम वैसे के वैसे ही हैं। सुन तो रहे हैं कि शराब पीना बहुत खराब है लेकिन पीते ही जा रहे हैं। पीते हुए भी कह रहे हैं कि शराब पीना बड़ा खतरनाक है। तो ये अन्तर हमें स्पष्ट रूप से अनुभव करना होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

अष्ट रत्नों की माला का रहस्य

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

इस संसार में करोड़ों-करोड़ों मनुष्य आत्मायें हैं। जीव-जन्तुओं की आत्माओं की तो गिनती ही नहीं। जनसंख्या दिनोदिन बढ़ती ही जा रही है। लोग सोचते हैं कि कहाँ से ये सब आ रहे हैं। तो ये सोचते हैं कि 84 लाख जन्म लेते हैं, भोग के 84 लाख योनियां फिर मनुष्य बनते हैं। तब तो जानवरों की संख्या कम हो जानी चाहिए। लेकिन सभी की बढ़ी है कुछ ही जानवर कम हुए हैं। तो मनुष्य तो मनुष्य ही बनता है उनमें सभी मनुष्य आत्माओं में, सबसे महान अग्रणि नेक्स्ट टू गॉड होते हैं अष्ट रत्न। यानी सारे संसार की आत्माओं में से भगवान ने आठ रत्नों को चुना है। जैसे यूनिवर्सिटी एग्ज़ाम में टॉप टेन स्टूडेंट्स चुने जायें। इस गॉडली यूनिवर्सिटी में आठ टॉप स्टूडेंट होते हैं। इसलिए आपने देखा होगा नौ रत्नों की माला, नौ रत्नों की अंगुठियां पहनी जाती हैं विघ्नों को नष्ट करने के लिए। आठ ये आत्मायें हैं जिनको अष्ट रत्न, अष्ट देव कहा जाता है। इष्ट देव कहा जाता है और एक है इनको बनाने वाला निराकार परमात्मा। तो ये नौ।

ये अष्ट रत्न इस संसार की सबसे महान आत्मायें हैं। नेक्स्ट टू गॉड। इसको इस रूप से समझ सकते हैं। जो सम्पूर्ण गॉड, निराकार परम आत्मा है, वो 100 डिग्री है उसकी डिग्री 100 है तो ब्रह्मा की 99 है। उससे सेकण्ड है सरस्वती, जगदम्बा उसकी 98 और फिर बाकी 6 रत्न 97, 96, 95...। तो ये 90 से ऊपर हैं। मॉस्ट पॉवरफुल आत्मायें, सम्पूर्ण निर्विकारी, बहुत शक्तिशाली। अष्ट रत्नों में आना तो सब चाहते हैं पर ये मंज़िल बहुत बड़ी है। किसी को ये सोचने की भी ज़रूरत नहीं कि केवल जो आदि रत्न हैं वो ही अष्ट रत्नों में आयेंगे, नहीं। इनमें कुमार-कुमारियां भी होंगी, एक-दो ग्रहस्थ भी होंगे। कभी बाबा से पूछा गया था कि क्या आठ की माला में भाईयों का भी नम्बर है? देखिए, उत्तर सुन लीजिए- 73 की मुरली है आप पढ़ सकते हैं। मास तो मुझे याद नहीं है। बाबा ने कहा कि भाई भी हैं, तो पूछा कितने? तो बाबा ने कहा एक से अधिक। उसमें दो तो कम से कम हो ही गये। कोई ये नहीं सोचे कि हम नहीं आ सकते। लेकिन अब वो तो बहुत बड़ी बात हो गई है।

अष्ट रत्न माना निरंतर योगयुक्त रहने वाली आत्मा। पहली शर्त, दूसरी सम्पूर्ण पवित्र, जिन्हें अपवित्रता की अविद्या हो गई। केवल उसको जीत नहीं लिया, केवल एक छोटे बच्चे जैसी स्थिति आ गई, तीसरी बात, वे सम्पूर्ण रूप से आत्म अभिमानी हो जाते हैं। सुना होगा आपने मुरलियों में, जो सम्पूर्ण रूप से आत्म अभिमानी हो जाते हैं वो ही अष्ट रत्न बनते हैं। बिल्कुल बाबा के समीप हैं। उनकी उपस्थिति ही इस संसार के लिए बहुत बड़ा बल है। ऐसा समझ लें कि इस कल्प के अंत में जब जयजयकार होगी, प्रत्यक्षता होगी तो ये साकार में आठ भगवान हैं, इसके रूप में माने जायेंगे। अष्ट विनायक भी हैं आपने नाम सुना होगा।

जब ये 108 रत्न सम्पूर्णता को प्राप्त होंगे, कर्मातीत स्थिति को प्राप्त होंगे तब विश्व युद्ध होगा। अभी तो 108 विजयी रत्नों को तैयार होना है। ये ऐसे लाइट हाउस होंगे जिससे जग का अंधकार दूर हो जायेगा। अभी वो समय आ रहा है।

ये अष्ट रत्न हैं, और भिन्न-भिन्न विघ्नों को नष्ट करने के लिए भिन्न-भिन्न आत्मा हैं। एक ही आत्मा सभी तरह के विघ्नों को नष्ट नहीं करेगी, आठ हैं। इसलिए इन्हें अष्ट विनायक के रूप में दिखाया गया है। तो बड़े गुह्य रहस्य हैं। अष्ट रत्नों के पास अष्ट शक्तियां निरंतर नैचुरल रूप से कार्य करेंगी। ये संसार के लिए लाइट हाउस हैं और इनके लिए बाबा ने कहा कि इनके जो वायब्रेशन्स हैं, इनकी जो किरणें हैं वो सारे संसार तक फैलती हैं। इनका औरा नापा नहीं जा सकता। अनंत होता है। सारे संसार में फैलता रहता है इसलिए इनकी उपस्थिति विश्व की बहुत बड़ी सेवा करती है। ऐसा समझ लें ये जहान के आधारमूर्त होते हैं। तो अष्ट रत्न ये हैं।

उसके बाद सौ हैं, यहाँ जो क्रिमिनल्टी है, आसुरियता आ गई है वो नष्ट हो जायेगी इनके वायब्रेशन्स के द्वारा। ये सब तो बहुत थोड़े समय से आये हैं पचास-साठ साल कि ये सब बिगड़ा हुआ खेल है संसार का। उससे पहले तो संसार काफी अच्छा था। अब इन अष्ट रत्नों के वायब्रेशन्स से, ये सब अब तैयार हो चुके हैं। लगभग तैयार इनके द्वारा बहुत बड़ी विश्व परिवर्तन की सेवा होती रहेगी। मैं आप सबको एक रहस्य और बता दूं, बाबा हमेशा कहते हैं तुम्हारा कर्मातीत होना और महाभारत युद्ध शुरू होना साथ-साथ होंगे, दोनों का सम्बन्ध है। महाभारत युद्ध का सीधा-सा सम्बन्ध है आज की भाषा में तीसरा विश्व युद्ध। जो उस महाभारत से शायद बहुत भयानक दिखाई दे हम सबको।

जो ये 108 रत्न हैं ये बहुत श्रेष्ठ और गुप्त पुरुषार्थी हैं। वो तो यहीं हैं, वो कहीं गये नहीं हैं। वो इन व्यर्थ के झंझटों में नहीं रहते। वो तेरे-मेरे में भी नहीं रहते। वो मुक्त रहते हैं। और जब ये 108 रत्न सम्पूर्णता को प्राप्त होंगे, कर्मातीत स्थिति को प्राप्त होंगे तब विश्व युद्ध होगा। अभी तो 108 विजयी रत्नों को तैयार होना है।

ये ऐसे लाइट हाउस होंगे जिससे जग का अंधकार दूर हो जायेगा। अभी वो समय आ रहा है। अभी इन्होंने गुप्त रूप से तपस्या कर ली है। इनके पास बहुत ज्यादा स्प्रिचुअल पॉवर आ गई है। उनके बोल में बहुत शक्तियां आ गई हैं। कुछ उनमें से चले भी गए। कुछ इस संसार में उपस्थित भी हैं। जिनके द्वारा अब जयजयकार का काम होगा, प्रत्यक्षता का काम होगा, जहाँ-तहाँ साक्षात्कार होंगे। और अनेक आत्मायें भगवान से मिलने के लिए आ जायेंगी। यही इष्ट देव और देवियों के रूप में प्रख्यात होंगे।

तो जो इस देव-देवी के भक्त हैं- जैसे हम सब भगवान से मिले, वो अपने इष्ट देव और देवियों से मिल लेंगे। तो एक बहुत सुन्दर समय की ओर हम चल रहे हैं। ये एक बहुत गुह्य रहस्य है इस विश्व ड्रामा का। इसको भी जानते चलें।

रीवा-म.प्र.। टोंस जल विद्युत परियोजना सिरमौर में परियोजना प्रमुख अति. मुख्य अभियंता के द्वारा आयोजित विशिष्ट कार्यशाला को मुख्य अतिथि के रूप में ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर टोंस जल विद्युत परियोजना के परियोजना प्रमुख एवं अति. मुख्य अभियंता एस.डी. उपाध्याय, श्रीमती एसडी उपाध्याय,धर्मपत्नी परियोजना प्रमुख, मध्य प्रदेश शासन के अधिमान्यता प्राप्त पत्रकार धर्मेंद्र पांडे, डॉ. ब्र.कु. अर्चना बहन, टोंस जल विद्युत परियोजना के अधीक्षण यंत्री राकेश गुप्ता, चिकित्सा अधिकारी के रूप में एल.एल. ताम्रकार, परियोजना के सुरक्षा अधिकारी जेडी एच. जाफरी, सिरमौर क्षेत्र में पिछले 30 वर्षों से मानव कल्याण हेतु सेवा दे रहे कैलाश तिवारी, ब्र.कु. नेहा बहन, ब्र.कु. सत्येंद्र भाई, ब्र.कु. प्रकाश भाई तथा बड़ी संख्या में सिरमौर टोंस परियोजना के अनेक वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)। पत्रिका जनादेश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह एवं डॉ. ब्र.कु. रीना दीदी। पत्रिका जनादेश यात्रा द्वारा पूरे प्रदेश में सभी को मतदान का संकल्प कराया गया।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर 'नशा मुक्ति अभियान - आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा नशामुक्त समाज' के शुभारंभ कार्यक्रम में अपना उद्बोधन देते हुए रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के वाइस चांसलर राजेश वर्मा। मंचासीन हैं कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. पुष्पराज पटेल, कैंसर सर्जन डॉ. प्रीति जैन, ब्र.कु. विमला दीदी तथा अन्य।

सिकंदराबाद-वेस्ट मरेडपल्ली(तेलंगाना)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय 'समर कैम्प' में लगभग 80 बच्चों ने भाग लिया। शिविर में विभिन्न विषयों पर बच्चों का मार्गदर्शन करने के साथ ही उन्हें विभिन्न एक्टिविटीज़ कराई गई। समापन अवसर पर प्राइज़ डिस्ट्रिब्यूशन कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की सिकंदराबाद सबज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, राजयोगी ब्र.कु. सत्यनारायण भाई, चेयरमैन ऑफ लैम्को ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ कोंडल राव, जस्टिस वी. ईश्वरैय्या गरु,फॉर्मर बैकवॉर्ड क्लास चेयरमैन, इंडियन स्पोर्ट्स ओनर रवि मदान आदि गणमान्य लोग मौजूद रहे।

इंदौर-बैराठी कॉलोनी(म.प्र.)। डेफ,डम्ब एंड ब्लाइंड स्कूल में दिव्यांग बच्चों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शारदा बहन, प्राचार्य नितिन जैन, स्कूल के सभी टीचर्स स्टाफ तथा बच्चे।

धडगांव-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर शहर के बस स्थानक परिसर में नशामुक्ति और आध्यात्मिक राजयोग मेडिटेशन प्रदर्शनी का आयोजन कर लोगों को व्यसनों से दूर रहने के लिए जागरुक किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. प्रताप भाई, ब्र.कु. राजू भाई, ब्र.कु. गोविन्द भाई, ब्र.कु. मुकुंद भाई, ब्र.कु. मगन भाई आदि उपस्थित रहे।

सूरत-कतारगाम(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के अवसर पर प्राणनाथ अस्पताल में सभी नर्स भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश एवं सौगात देने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शारदा बहन, डॉ. राजवी बहन,गायनेक, प्राणनाथ अस्पताल के मुख्य डॉक्टर अविचल जी, मैनेजर ब्रिजेश भाई, नर्सिंग स्टाफ तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मातृ दिवस के उपलक्ष्य में सिकंदर कम्पू स्थित सूर्य विहार कॉलोनी में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिज्ञा कराते हुए माधौगंज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी। कार्यक्रम में कविता पमनानी तथा स्थानीय लोग मौजूद रहे।

पुणे-ससानेनगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित चार दिवसीय 'समर कैम्प' के समापन अवसर पर प्रशांत राठोड सर व श्रुतिका तै क्षीरसागर,जननी फाउंडेशन और पीएस म्यूज़िकल ग्रुप के संचालक जज के रूप में उपस्थित रहे। समर कैम्प के दौरान ब्र.कु. आशीष भाई व अन्य ब्र.कु. बहनों द्वारा प्रतिभागी 80 से अधिक बच्चों का विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया गया व विभिन्न एक्टिविटीज़ कराई गई। समापन अवसर पर बच्चों के अभिभावक सहित अन्य भाई-बहनें भी शामिल रहे।

एम्बेसी ऑफ इंडिया इन मॉस्को में...

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पाँच दिवसीय राजयोग मेडिटेशन प्रोग्राम

मॉस्को-रशिया। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ब्र.कु. सुधा दीदी ने रूस में भारतीय दूतावास में नवनियुक्त भारत के राजदूत विनय कुमार से मुलाकात कर उन्हें बधाई देते हुए उन्हें भारत और रूस के हित में राजनयिक मुद्दों को सुलझाने में सफलता के लिए शुभकामनायें दी। राजदूत के साथ एक घंटे तक चले वार्तालाप के दौरान दीदी ने उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की कार्यप्रणाली एवं रशिया में संस्थान के इतिहास एवं गतिविधियों से अवगत कराया। तत्पश्चात् राजदूत ने दूतावास के अधिकारियों के लिए मेडिटेशन पर एक व्याख्यान श्रृंखला आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की।

राजयोग मेडिटेशन के पश्चात् इनके अनुभव... इन्हीं के शब्दों में

गुस्सा आने पर मेरी ही तरह सामने वाला भी है, ये सोच रखें

पाँच दिवसीय योग शिविर के समापन अवसर पर *इओना सिन्हा,राजदूत की धर्मपत्नी* ने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आई हूँ। यहां सुधा बहन ने हमें जीवन के दूसरे पक्ष से परिचित कराया। क्योंकि हम हमेशा बाहर की ओर भागते रहते हैं। उन्होंने बताया कि एक और रास्ता है जो हमारे अंदर की ओर जाता है। जब हमें किसी की बात से गुस्सा आये तो हमें ये समझना है कि मैं एक आत्मा हूँ और सामने वाला भी बिल्कुल मेरी तरह एक आत्मा है। ऐसा सोचने से धीरे-धीरे हमारा गुस्सा कम होता चला जायेगा।

इसके तहत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दूतावास परिसर के डी.पी. धर हॉल में पाँच दिवसीय 'राजयोग मेडिटेशन शिविर' का आयोजन किया गया। दूतावास के सभी सदस्यों ने बहुत ही रुचि के साथ नियमित रूप से इसमें भाग लिया।

'सोचने' से पहले 'सोचने' का भाव पसंद आया

मधुरकंकना,डायरेक्टर, जवाहरलाल नेहरू कल्चरल सेंटर,एम्बेसी ऑफ इंडिया ने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि एम्बेसी ऑफ इंडिया ऑफिशियल्स और स्टाफ के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पहली बार आयोजित पाँच दिवसीय शिविर व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए बहुत ही उपयोगी और आगे बढ़ाने वाला रहा है। ये पाँच दिनों का अनुभव हमें सिखाता है कि हमें अपने भीतर उतरना है, अपने आंतरिक चीज़ों को समझना है और इस राजयोग अभ्यास को नियमित बनाये रखना है। मुझे 'सोचने से पहले सोचने' का विचार व्यक्तिगत रूप से बहुत पसंद आया। इसका मतलब है कि अगर मैं अपने विचारों पर नियंत्रण कर सकती हूँ, अगर मैं समझ सकती हूँ कि मुझे क्या सोचना है तो जीवन की परिस्थितियों पर मैं नियंत्रण पा सकती हूँ। ये जागरुकता मुझमें आ जाएगी। दीदी ये यह भी बताया कि हम सभी एक परमात्मा पिता की संतान हैं जो हमें दूसरों के लिए अधिक दयालु, सहानुभूतिपूर्ण बनाता है। और यह आज की ज़रूरत भी है।

ऐसा अनुभव मुझे पहले कभी नहीं हुआ

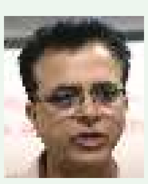

यशपाल सिंह,पीएस टू द एम्बेसडर ने कहा कि एम्बेसी ऑफ इंडिया में इस तरह के कार्यक्रम और इसके द्वारा मिले ज्ञान और अनुभवों के लिए हम सुधा दीदी, विजय भाई और इस संस्थान के आभारी और शुक्रगुज़ार हैं। इस कार्यक्रम से हम सभी में एक जागृति आई है। मैं इस कार्यक्रम में शामिल होकर अपने आप को बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूँ। ये हम सभी के लिए यूनिक चीज़ है जो आत्मा को जागृत करती है। मैंने ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं किया था। सच में ये भविष्य में हमारे मन, हमारी आत्मा, शरीर और हम सभी के लिए फायदेमंद होगा।

जीवन जीने का दृष्टिकोण ही बदल गया

रोहित सिंह,फर्स्ट सेक्रेट्री,एम्बेसी ऑफ इंडिया ने कहा कि मैं पहले भी मेडिटेशन और परमात्मा क्या है, वो कौन है, इनसे जुड़े कई सत्रों में शामिल हुआ हूँ, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इन दिनों आयोजित सत्र सचमुच जागरुक करने वाले रहे। जिसने हमें हमारे जीवन का उद्देश्य बताया, मन की शांति दी और ये सिखाया कि हमें अपने जीवन को किस तरह शांतिपूर्ण और संयमित तरीके से जीना है, कैसे सबकुछ हमारे लिए आंतरिक है और हम आस-पास के लोगों से प्रभावित हुए बिना अपनी स्थिति को कैसे नियंत्रित रख सकते हैं। ये जानने में यह कार्यशाला बहुत ही मददगार रही। मैं इस आयोजन के लिए सुधा दीदी और इस संस्थान को धन्यवाद देता हूँ।

संस्थान द्वारा सिखाई जाने वाली बातें सहज ही भीतर उतरती हैं

सुप्रीत कौर,अटैशे कल्चर,जेएनसीसी, एम्बेसी ऑफ इंडिया ने कहा कि यह एक बहुत अच्छा अनुभव रहा, जो मेरे जीवन में थोड़ी अधिक शांति लेकर आया। इस दौरान मैंने यूनिवर्स के साथ अधिक सामंजस्य महसूस किया। जिस तरह एक छोटे बच्चे को, स्कूल जाने वाले बच्चे को सिखाया जाता है, उसी तरह इस संस्थान द्वारा अच्छी बातें सिखाई जाती हैं जो सीधे हमारे भीतर उतरती हैं। मैं आगे भी ऐसे कार्यक्रम का हिस्सा बनना पसंद करूंगी।

आपसे आपका परिचय कराता है संस्थान

कुसुम,स्पाउस ऑफ मिलिट्री अटैशे,एम्बेसी ऑफ इंडिया ने कहा कि मैं इस शिविर का अनुभव करने के लिए काफी उत्सुक थी। मेरे बड़े भाई और भाभी इस संस्था के सदस्य हैं और मेरी भतीजी भी 8-9 साल से इससे जुड़ी हुई है। इसलिए मैं सोचा करती थी कि इस संस्था में ऐसा क्या खास है कि लोग इस तरफ जा रहे हैं। लेकिन अब मैंने खुद ये रियलाइज़ किया कि ये संस्थान आपसे आपका परिचय कराता है। मैं अपने बारे में और अधिक जानने के लिए बहुत आकर्षित थी। इस कार्यक्रम ने मुझे एक मौका दिया है स्वयं को जानने का और परमात्मा से जुड़ने का। भविष्य में भी मैं और मेरे हस्बेंड सेवाकेंद्र में जाकर ऐसे सत्र में शामिल होना चाहेंगे।

अपने दिमाग को सकारात्मक बना सकते हैं

एल्विना गटीना, इंटरप्रेटर-कम-क्लर्क, जेएनसीसी,एम्बेसी ऑफ इंडिया ने कहा कि सुधा दीदी ने बताया कि हम अपने आसपास की चीज़ों को एक अलग दृष्टिकोण से देख सकते हैं, अपने जीवन में सकारात्मकता बढ़ाते हुए अपने विचारों, अपने दिमाग को नियंत्रित कर सकते हैं और अपने जीवन में कुछ अच्छा ला सकते हैं। मैंने सच में इसका बहुत लाभ लिया और इसे बहुत एन्जॉय किया। मैं एम्बेसी में ऐसे आयोजन के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान की आभारी हूँ। शिविर में नारोएम,हेड ऑफ चांसलरी, सिस्टर कैपिटोनोवा, बिग्रेडियर नवीन निज़ावन,आर्मी अटैशे, श्रीमती कुसुम निज़ावन, डॉ. बृजेश गुप्ता,टीचर ऑफ योग आसन्स,पंचकर्मा एंड नेचरोपैथी,जेएनसीसी आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। श्रीमती अदिति बहन,वोकल टीचर ने परमात्म स्मृति में सुंदर गीत प्रस्तुत किया। अंत में सभी प्रतिभागियों को मधुबन माउण्ट आबू की टोली व ब्लेसिंग कार्ड दिया गया।

मेडिटेशन से पीसफुल माइंड जीना संभव

डॉ. हेना मोहन,एम्बेसी डॉक्टर,एम्बेसी ऑफ इंडिया ने कहा कि मैं सुधा दीदी और अपने एम्बेसेडर को इस अद्भुत आयोजन के लिए धन्यवाद देती हूँ। यह हम सभी के लिए बहुत ही लाभदायी है और सभी को जागृति दिलाने वाला है। एक डॉक्टर होने के नाते मैं ये जानती हूँ कि हमारा शारीरिक स्वास्थ्य काफी हद तक हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। आज के वातावरण में सभी की स्थिति बहुत तनावपूर्ण है। ऐसे में व्यक्तिगत रूप से मैं इस सत्र को बहुत महत्वपूर्ण मानती हूँ जिसमें हमने जाना कि किस तरह मेडिटेशन के माध्यम से हम एक पीसफुल लाइफ जी सकते हैं। इसे हमने समझा है और हम इसका अभ्यास ज़रूर करते रहेंगे।

नकारात्मक सोच से मानसिक और शारीरिक ऊर्जा में आती है कमी : ब्र.कु. शिवानी

बड़ौत-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव सभागार में आयोजित 'खुशनुमा जीवन जीने की कला' कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता व राष्ट्रपति द्वारा नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित ब्र.कु. शिवानी बहन ने जीवन को खुशनुमा बनाने की कला सिखाते हुए कहा कि हमारी जीवनशैली सकारात्मक होनी चाहिए। उसमें तनिक भी नकारात्मकता नहीं होनी चाहिए। हमको ना तो किसी में कोई बुराई ढूंढ़नी है और ना ही किसी की कोई बुराई करनी है। नकारात्मक सोच से मानसिक और शारीरिक ऊर्जा में कमी आती है। उन्होंने कहा कि हर पल अच्छे विचारों को ग्रहण करें, रात को सोने से

दीप प्रज्वलित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शिवानी बहन, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मोहिनी बहन, डॉ. मनीष तोमर एवं दिगंबर जैन डिग्री कॉलेज के सेक्रेटरी डॉ. धरेन्द्र कुमार जैन।

पहले सभी नकारात्मक विचारों का त्याग करके सोएं और सुबह उठने के बाद परम पिता परमेश्वर का ध्यान करें और जीवन को सकारात्मक बनाने का संकल्प लें। शिवानी बहन ने कहा कि हमें यह देखना होगा कि दिनभर में हम ऐसे कौन से कार्य या व्यवहार करते हैं जिनसे मन की बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। अक्सर बात-बात में गुस्सा करना, काम को ठीक प्रकार से नहीं करना और किसी बात विशेष को पकड़ कर बैठ जाने से मन की बैटरी डाउन होती है। उन्होंने कहा कि घर के वातावरण को खुशनुमा बनाएं। ध्यान-योग करें। दिन की शुरुआत सकारात्मक ऊर्जा के साथ करें। साथ ही दिन का अंत भी आध्यात्मिक

'खुशनुमा जीवन जीने की कला' कार्यक्रम को प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शिवानी बहन ने किया सम्बोधित

तरीके से ही करें। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यावरण राज्यमंत्री के. पी. मलिक, एसडीएम बड़ौत अमरचंद वर्मा, डॉ. मनीष तोमर, दिगंबर जैन कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. वीरेंद्र सिंह, नगर पालिका बड़ौत परिषद की अध्यक्षा बबीता तोमर, तीर्थंकर ऋषभदेव सभागार समिति बड़ौत के अध्यक्ष धन कुमार जैन, महामंत्री डॉ. धनेंद्र कुमार जैन आदि प्रतिष्ठित लोग व नगरवासी गमौजूद रहे।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th June, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org